RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 331
दि. 04.04.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

आप में उफानः राघव चड्ढा विवाद ने खोली अंदरुनी कलह की परतें

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के भीतर simmer कर रही असहमति अब खुलकर सियासी संघर्ष में बदलती दिखाई दे रही है। राज्यसभा में उपनेता पद से हटाए जाने के बाद राघव चड्ढा के तेवर और तीखे हो गए हैं, और उनके बयानों ने न सिर्फ पार्टी नेतृत्व को असहज किया है बल्कि राजनीतिक गलियारों में नई अटकलों को भी जन्म दे दिया है। एक समय पार्टी के सबसे भरोसेमंद चेहरों में गिने जाने वाले चड्ढा अब अपने ही संगठन के निशाने पर हैं, और यह पूरा घटनाक्रम पार्टी की आंतरिक एकता पर गंभीर सवाल खड़े कर रहा है।

राघव चड्ढा ने अपने पद से हटाए जाने के बाद जो प्रतिक्रिया दी, वह किसी साधारण नाराजगी का संकेत नहीं बल्कि एक बड़े असंतोष का प्रतीक मानी जा रही है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि उन्हें खामोश कराया गया है, लेकिन वे हारे नहीं हैं। इस बयान को राजनीतिक विश्लेषक एक संकेत के रूप में देख रहे हैं कि चड्ढा आने वाले समय में और आक्रामक रुख अपना सकते हैं। उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि क्या संसद में जनता के मुद्दे उठाना अब अपराध बन गया है, जो सीधे तौर पर पार्टी नेतृत्व के फैसलों पर सवाल खड़ा करता है।

इस पूरे विवाद ने तब और तूल पकड़ लिया जब पार्टी की वरिष्ठ नेता आतिशी ने राघव चड्ढा पर सीधा हमला बोल दिया। उन्होंने न सिर्फ उनकी वफादारी पर सवाल उठाए, बल्कि यह भी आरोप लगाया कि जब पार्टी कठिन दौर से गुजर रही थी, तब चड्ढा विदेश में थे। यह बयान स्पष्ट करता है कि पार्टी के भीतर भरोसे की खाई कितनी गहरी हो चुकी है। आतिशी ने यह भी संकेत दिया कि चड्ढा शायद भाजपा के प्रभाव में आ सकते हैं, जो कि एक गंभीर राजनीतिक आरोप है और इससे पार्टी के भीतर अविश्वास की स्थिति और गहरी होती नजर आ रही है।

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने भी इस विवाद में सख्त रुख अपनाते हुए यह स्पष्ट कर दिया कि पार्टी अनुशासन से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने

कहा कि राजनीति में व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से ऊपर सामूहिक निर्णय होते हैं और जो भी पार्टी लाइन के खिलाफ जाएगा, उसके खिलाफ कार्रवाई तय है। यह बयान इस बात का संकेत है कि पार्टी नेतृत्व अब किसी भी प्रकार की असहमति को सख्ती से नियंत्रित करना चाहता है। दरअसल, राघव चड्ढा को उपनेता पद से हटाकर अशोक कुमार मित्तल को जिम्मेदारी सौंपना केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं बल्कि एक बड़ा राजनीतिक संदेश माना जा रहा है। इससे यह साफ हो गया है कि पार्टी नेतृत्व अब चड्ढा पर भरोसा खो चुका है और उनकी भूमिका को सीमित करने की कोशिश कर रहा है। यह कदम पार्टी के भीतर शक्ति संतुलन को भी दर्शाता है, जहां नए चेहरों को आगे लाने की रणनीति अपनाई जा रही है।

इस पूरे घटनाक्रम के पीछे की इनसाइड स्टोरी भी कम दिलचस्प नहीं है। सूत्रों के मुताबिक, पिछले कुछ समय से राघव चड्ढा पार्टी के भीतर अपनी स्थिति मजबूत करने की कोशिश कर रहे थे। खासतौर पर जब संजय सिंह जेल में थे, उस दौरान उन्होंने राज्यसभा में नेतृत्व की भूमिका पाने के लिए प्रयास किए। हालांकि, यह कोशिश सफल नहीं हो सकी और यहीं से उनके और पार्टी नेतृत्व के बीच दूरी बढ़ने लगी।

इसके अलावा, यह भी आरोप लगाए जा रहे हैं कि चड्ढा ने पार्टी के कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों में सहयोग नहीं किया और कई मौकों पर पार्टी लाइन से अलग रुख अपनाया। चाहे वह संसद में व्हिप का पालन न करना हो या फिर विपक्ष के महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर हस्ताक्षर न करना, इन सभी घटनाओं ने पार्टी नेतृत्व के बीच उनकी छवि को कमजोर किया है। खासतौर पर मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ प्रस्ताव पर हस्ताक्षर न करने को लेकर पार्टी ने कड़ा रुख अपनाया, क्योंकि इसे एक महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दा माना जा रहा था।

पंजाब से राज्यसभा सांसद होने के बावजूद चड्ढा पर यह आरोप भी लगे हैं कि उन्होंने राज्य से जुड़े मुद्दों को पर्याप्त रूप से नहीं उठाया। यह बात पार्टी के लिए और भी संवेदनशील है, क्योंकि पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार है और वहां के हितों की अनदेखी को गंभीरता से लिया जाता है। इसके अलावा, गुजरात में पार्टी कार्यकर्ताओं पर हुई कार्रवाई के दौरान भी उनकी चुप्पी को लेकर सवाल उठाए गए हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह विवाद केवल एक व्यक्ति और पद का मामला नहीं है, बल्कि यह आम आदमी पार्टी के भीतर नेतृत्व, रणनीति और भविष्य की दिशा को लेकर चल रही खींचतान का परिणाम है। जिस तरह से आरोप-प्रत्यारोप सामने आ रहे हैं, उससे यह स्पष्ट है कि पार्टी के भीतर एक बड़ा वर्ग असंतुष्ट है और आने वाले समय में यह असंतोष और बढ़ सकता है।

इस पूरे घटनाक्रम ने यह भी संकेत दिया है कि आम आदमी पार्टी अब एक नए मोड़ पर खड़ी है, जहां उसे अपने संगठनात्मक ढांचे और आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत करने की जरूरत है। अगर समय रहते इन मतभेदों को सुलझाया नहीं गया, तो इसका असर पार्टी की राजनीतिक स्थिति पर भी पड़ सकता है, खासतौर पर ऐसे समय में जब वह राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश कर रही है।

फिलहाल, राघव चड्ढा और पार्टी नेतृत्व के बीच बढ़ती दूरी ने यह साफ कर दिया है कि आने वाले दिनों में आम आदमी पार्टी के भीतर सियासी घमासान और तेज हो सकता है। यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या यह विवाद किसी समझौते की ओर बढ़ता है या फिर पार्टी के भीतर एक बड़ी टूट का कारण बनता है।

तमिलनाडु की सियासत में नया मोड़: अन्नामलाई की गैरमौजूदगी के पीछे क्या संकेत?

चेन्नई की राजनीतिक हलचल इन दिनों अपने चरम पर है। विधानसभा चुनाव के नजदीक आते ही तमिलनाडु में सियासी तापमान तेजी से बढ़ता जा रहा है। हर पार्टी अपने पत्ते खोल रही है, उम्मीदवारों की सूची जारी हो रही है और गठबंधनों की गणित साधी जा रही है। इसी बीच भारतीय जनता पार्टी द्वारा जारी की गई 27 उम्मीदवारों की सूची ने एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया—पार्टी के प्रमुख और चर्चित चेहरे K. Annamalai को टिकट क्यों नहीं दिया गया?

यह सवाल केवल एक नाम के गायब होने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे तमिलनाडु की जटिल राजनीतिक रणनीति और गठबंधन की मजबूरियां भी छिपी हुई हैं। अन्नामलाई, जो कभी एक सख्त और ईमानदार आईपीएस अधिकारी के रूप में पहचाने जाते थे, पिछले कुछ वर्षों में भाजपा के लिए तमिलनाडु में एक आक्रामक और ऊर्जावान नेता के रूप में उभरे हैं। उन्होंने राज्य में पार्टी की जमीनी पकड़ मजबूत करने के लिए लगातार यात्राएं, जनसभाएं और तीखे राजनीतिक हमले किए, जिससे भाजपा

को एक नई पहचान मिली।

लेकिन जब उम्मीदवारों की सूची सामने आई और उसमें उनका नाम नहीं था, तो राजनीतिक गलियारों में चर्चा तेज हो गई कि क्या यह फैसला सहयोगी दल AIADMK को साधने के लिए लिया गया है। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि अन्नामलाई और एआईएडीएमके के बीच पिछले कुछ समय से संबंध तनावपूर्ण रहे हैं। उनके कई बयानों ने सहयोगी दल को असहज किया था और यही कारण था कि दोनों पार्टियों के बीच दूरी भी बढ़ गई थी।

दरअसल, 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले अन्नामलाई ने जिस आक्रामक शैली में राजनीति की, उसने भाजपा को चर्चा में जरूर लाया, लेकिन गठबंधन की राजनीति में यह शैली हमेशा कारगर नहीं होती। एआईएडीएमके जैसे क्षेत्रीय दल के साथ तालमेल बैठाने के लिए संतुलन और संयम की आवश्यकता होती है। अन्नामलाई ने अपने बयानों को वापस लेने से इनकार किया, जिससे दोनों दलों के रिश्तों में खटास और बढ़ गई। परिणामस्वरूप लोकसभा चुनाव में दोनों पार्टियों को अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी। अब जब विधानसभा चुनाव सामने है, तो भाजपा और एआईएडीएमके ने एक बार फिर साथ आने का फैसला किया है। ऐसे में यह जरूरी हो गया था कि गठबंधन में किसी भी तरह की असहमति को कम किया जाए। अन्नामलाई का टिकट न मिलना इसी रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है। हालांकि इस पूरे मामले पर खुद अन्नामलाई ने साफ कर दिया है कि उन्होंने स्वेच्छा से चुनाव न लड़ने का निर्णय लिया है और वे एक कार्यकर्ता के रूप में पार्टी का समर्थन करेंगे।

उनका यह बयान भले ही सादगी से भरा हो, लेकिन इसके पीछे की राजनीतिक परतें काफी गहरी हैं। शुरुआत में उन्हें कुछ सीटों की जिम्मेदारी दी गई थी, लेकिन बाद में उन्होंने पारिवारिक कारणों का हवाला देकर उस जिम्मेदारी से भी दूरी बना ली। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह केवल निजी कारण नहीं, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा हो सकता है, जिससे गठबंधन में किसी प्रकार का टकराव न हो।

यह भी दिलचस्प है कि राज्य स्तर पर भले ही अन्नामलाई को फिलहाल कोई बड़ी भूमिका नहीं दी गई हो, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर उनकी स्वीकार्यता लगातार बढ़ रही है। Narendra Modi और Amit Shah जैसे शीर्ष नेताओं ने कई बार उनके नेतृत्व कौशल और कार्यशैली की सराहना की है। इससे यह संकेत भी मिलते हैं कि भाजपा उन्हें भविष्य में किसी बड़े राष्ट्रीय दायित्व के लिए तैयार कर रही है।

पीओके पर बड़ा बयान: “घर वापसी” की बात ने तेज की सियासी और कूटनीतिक बहस

श्रीनगर से आई एक अहम राजनीतिक प्रतिक्रिया ने एक बार फिर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर यानी पीओके को लेकर बहस को तेज कर दिया है। All India Imam Organization के प्रमुख Umer Ahmed Ilyasi ने कश्मीर घाटी के दौरे के दौरान दावा किया कि पीओके की “घर वापसी” का समय नजदीक है और वहां के लोग जल्द ही तिरंगे के नीचे आना चाहते हैं। उनका यह बयान न केवल राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बन गया है, बल्कि इससे भारत-पाकिस्तान संबंधों और क्षेत्रीय स्थिति को लेकर भी नई बहस छिड़ गई है।

श्रीनगर में मीडिया से बातचीत करते हुए मुख्य इमाम ने कहा कि पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है और वह दिन दूर नहीं जब यह क्षेत्र फिर से भारत में शामिल होगा। उन्होंने इसे “घर वापसी” करार देते हुए कहा कि पीओके के लोग वर्तमान हालात से परेशान हैं और बदलाव की उम्मीद में भारत की ओर देख रहे हैं। उनके मुताबिक वहां की आम जनता आर्थिक तंगी, बुनियादी सुविधाओं की कमी और राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रही है, जिसके चलते वे खुद को उपेक्षित महसूस

कर रहे हैं।

इलियासी के इस बयान का एक महत्वपूर्ण पहलू उनका यह दावा भी रहा कि पीओके के लोग जनमत संग्रह की मांग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वहां के नागरिक चाहते हैं कि उन्हें अपनी इच्छा दुनिया के सामने रखने का अवसर मिले, ताकि वे यह स्पष्ट कर सकें कि वे किसके साथ रहना चाहते हैं। हालांकि, इस तरह के दावे संवेदनशील अंतरराष्ट्रीय मुद्दों से जुड़े होते हैं और इन पर अलग-अलग पक्षों के अपने-अपने दृष्टिकोण होते हैं।

इस पूरे बयान में उन्होंने वर्ष 2019 में लिए गए उस बड़े फैसले का भी जिक्र किया, जब केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाया था। उनके अनुसार, इस फैसले के बाद घाटी में विकास की रफ्तार तेज हुई है। उन्होंने कहा कि अब क्षेत्र में सड़क, रेल और अन्य आधारभूत ढांचे में उल्लेखनीय सुधार हुआ है और शांति का माहौल बना है। उनके मुताबिक, इसी बदलाव को देखकर सीमा पार रहने वाले लोगों की सोच में भी परिवर्तन आया है। हालांकि, यह भी ध्यान देने वाली बात है कि पीओके का मुद्दा केवल आंतरिक या भावनात्मक नहीं, बल्कि एक जटिल अंतरराष्ट्रीय और कूटनीतिक विषय है, जिसमें भारत और पाकिस्तान दोनों के दावे शामिल हैं। भारत लगातार यह कहता रहा है कि पूरा जम्मू-कश्मीर, जिसमें पीओके भी शामिल है, उसका अभिन्न हिस्सा है, जबकि पाकिस्तान इस पर अपना दावा जताता है। ऐसे में इस तरह के बयान राजनीतिक दृष्टिकोण को तो दर्शाते हैं, लेकिन वास्तविक स्थिति कई स्तरों पर निर्भर करती है—जिसमें कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय दबाव और जमीनी हालात शामिल हैं।

कश्मीर घाटी में हाल के वर्षों में हुए बदलावों को लेकर भी अलग-अलग राय सामने आती रही हैं। एक ओर सरकार और उसके समर्थक विकास, निवेश और शांति की बात करते हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ वर्ग अब भी चुनौतियों और समस्याओं की ओर इशारा करते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में इलियासी का बयान एक सकारात्मक तस्वीर पेश करता है, जिसमें वे घाटी के बदलाव को पीओके के लोगों के लिए प्रेरणा के रूप में देखते हैं।

इस बयान का असर केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी चर्चा को प्रभावित कर सकता है। पीओके का मुद्दा संयुक्त राष्ट्र समेत कई वैश्विक मंचों पर समय-समय पर उठता रहा है। ऐसे में किसी भी प्रमुख धार्मिक या सामाजिक नेता का बयान व्यापक प्रभाव डाल सकता है, खासकर जब वह संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्र से जुड़ा हो। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस तरह के बयान एक बड़े नैरेटिव का हिस्सा होते हैं, जो जनमत को प्रभावित करने और एक विशेष दृष्टिकोण को मजबूत करने के लिए दिए जाते हैं। यह भी संभव है कि इससे घरेलू राजनीति में संदेश देने की कोशिश की जा रही हो कि भारत अपने दावों को लेकर कितना स्पष्ट और दृढ़ है।

समंदर में भारत की बढ़ती ताकत: ‘अरिदमन’ और ‘तारागिरी’ से नौसेना को नई धार

विशाखापत्तनम और मुंबई से आई खबर ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि भारत अब सिर्फ जमीन और आसमान ही नहीं, बल्कि समंदर की गहराइयों में भी अपनी ताकत का परचम लहरा रहा है। बदलते वैश्विक सुरक्षा समीकरणों और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती रणनीतिक चुनौतियों के बीच भारतीय नौसेना को मिली दो बड़ी सौगात—परमाणु पनडुब्बी आईएनएस अरिदमन और अत्याधुनिक युद्धपोत आईएनएस तारागिरी—देश की समुद्री शक्ति को एक नई ऊंचाई पर ले जाती हैं। यह केवल रक्षा क्षेत्र की उपलब्धि नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत के संकल्प की सशक्त अभिव्यक्ति भी है। रक्षा मंत्री Rajnath Singh की मौजूदगी में विशाखापत्तनम में हुए भव्य समारोह में आईएनएस अरिदमन को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। यह क्षण केवल एक सैन्य औपचारिकता नहीं था, बल्कि भारत की परमाणु प्रतिरोधक क्षमता के और मजबूत होने का प्रतीक था। अपने आधिकारिक संदेश में रक्षा मंत्री ने ‘अरिदमन’ को शब्द नहीं, बल्कि शक्ति बताया—और यह बात इस पनडुब्बी की क्षमताओं को देखते हुए बिल्कुल सटीक प्रतीत होती है।

आईएनएस अरिदमन भारत की तीसरी स्वदेशी परमाणु बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी है, जो देश के परमाणु त्रिस्तरीय प्रतिरोध (न्यूक्लियर ट्रायड) को और सशक्त बनाती है। पानी के भीतर लगभग 44 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली यह पनडुब्बी दुश्मन के लिए लगभग अदृश्य है। इसकी सबसे बड़ी ताकत इसकी ‘स्टील्थ’ क्षमता है, जो इसे बिना सतह पर आए लंबे समय तक

गुप्त रूप से संचालित होने की अनुमति देती है। इसमें लगे के-15 और के-4 जैसे घातक बैलिस्टिक मिसाइल सिस्टम इसे दूर तक सटीक और विनाशकारी प्रहार करने में सक्षम बनाते हैं।

करीब 6,000 टन वजन वाली यह पनडुब्बी जब पूरी तरह जलमग्न होती है तो इसका वजन लगभग 7,000 टन तक पहुंच जाता है। इसके संचालन के लिए लगभग 95 से 100 प्रशिक्षित कर्मियों का दल तैनात रहता है, जिसमें अधिकारी और नाविक दोनों शामिल होते हैं। इस पनडुब्बी का हृदय है इसका 83 मेगावाट का परमाणु रिएक्टर, जो इसे बिना बार-बार सतह पर आए लंबे समय तक समुद्र की गहराइयों में रहने की क्षमता देता है। यही विशेषता इसे रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण बनाती है, क्योंकि यह किसी भी संभावित खतरे के समय दुश्मन पर अप्रत्याशित जवाबी कार्रवाई करने में सक्षम है।

दूसरी ओर, मुंबई से मिली खबर ने भी भारतीय नौसेना की ताकत में जबरदस्त इजाफा किया है। आईएनएस तारागिरी, जो कि प्रोजेक्ट 17ए के तहत विकसित एक अत्याधुनिक स्टील्थ फ्रिगेट है, अब नौसेना का हिस्सा बन चुका है। 6,670 टन वजनी यह युद्धपोत केवल एक जहाज नहीं, बल्कि भारत की स्वदेशी तकनीकी क्षमता और इंजीनियरिंग कौशल का प्रतीक है। इसे Mazagon Dock Shipbuilders Limited द्वारा तैयार किया गया है, जो देश के प्रमुख रक्षा शिपयार्ड्स में से एक है।

आईएनएस तारागिरी की सबसे खास बात इसकी स्टील्थ तकनीक है, जो इसे दुश्मन के रडार से बचाकर ऑपरेशन करने में सक्षम बनाती है। इसके डिजाइन में रडार क्रॉस-सेक्शन को कम किया गया है, जिससे यह दुश्मन की नजरों से लगभग ओझल रहता है। यह तकनीक आधुनिक नौसैनिक युद्ध में बेहद महत्वपूर्ण मानी जाती है, जहां ‘देखना और बिना दिखे हमला करना’ सबसे बड़ी रणनीति होती है।

इस युद्धपोत में 75 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री का उपयोग किया गया है, जो ‘मेक इन इंडिया’ पहल की सफलता का स्पष्ट प्रमाण है। इसके निर्माण में देश के 200 से अधिक सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों ने योगदान दिया है, जो यह दर्शाता है कि भारत का औद्योगिक तंत्र अब रक्षा क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

आईएनएस अरिदमन और आईएनएस तारागिरी का एक साथ नौसेना में शामिल होना ऐसे समय में हुआ है, जब हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भू-राजनीतिक तनाव बढ़ रहे हैं और समुद्री सुरक्षा का महत्व पहले से कहीं अधिक हो गया है। भारत की बढ़ती समुद्री भागीदारी और पूर्वी तट की रणनीतिक अहमियत को देखते हुए यह कदम अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यह न केवल भारत की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारत की स्थिति को एक जिम्मेदार और सक्षम समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करता है।

इन दोनों प्लेटफॉर्म्स की तैनाती से भारतीय नौसेना अब और अधिक सशक्त, आधुनिक और तैयार नजर आती है। जहां एक ओर अरिदमन जैसी परमाणु पनडुब्बी भारत की रणनीतिक प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करती है, वहीं तारागिरी जैसा अत्याधुनिक युद्धपोत समुद्री युद्ध में भारत की आक्रामक और रक्षात्मक दोनों क्षमताओं को बढ़ाता है।

यह उपलब्धि केवल तकनीकी या सैन्य दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह देश के आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का भी प्रतीक है। भारत अब उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल हो चुका है, जो अत्याधुनिक परमाणु पनडुब्बियां और स्टील्थ युद्धपोत स्वयं डिजाइन और निर्मित करने की क्षमता रखते हैं।

समंदर की गहराइयों में उतरती अरिदमन और लहरों को चीरती तारागिरी यह संदेश देती हैं कि भारत अब केवल अपने तटों की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वैश्विक समुद्री शक्ति बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। आने वाले समय में ये दोनों ही प्लेटफॉर्म भारत की समुद्री सुरक्षा और रणनीतिक संतुलन में निर्णायक भूमिका निभाने वाले हैं।

संपादकीय

कमजोर होता रुपया

पश्चिमी एशिया में जारी युद्ध के फलस्वरूप उत्पन्न ऊर्जा संकट के बीच डॉलर के मुकाबले रुपये का अब तक सबसे निचले स्तर पर पहुंचना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती है। निश्चित रूप से मजबूत मुद्रा भंडार होने के बावजूद रुपये पर दबाव होना, देश के सामने कई तरह मुश्किलें पैदा कर सकता है। कहा जा रहा है कि भारत फिर 2013 जैसी स्थितियों से रूबरू है। लेकिन इस बार जहां मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार है, वहीं तमाम वैश्विक उथल-पुथल के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियादी स्थिति 2013 के मुकाबले मजबूत है। दरअसल, वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता के बीच विदेशी निवेशक डॉलर को मजबूत निवेश के विकल्प के रूप में देखते हैं। इसीलिए वे उभरती अर्थव्यवस्थाओं से पूंजी निकालकर अमेरिकी अर्थव्यवस्था में निवेश कर रहे हैं। जिससे डॉलर मजबूत हो रहा है और रूपये जैसी दूसरी मुद्राएं कमजोर हो रही हैं। इसकी एक वजह अमेरिकी अर्थव्यवस्था की मजबूती भी है। जिसका नकारात्मक प्रभाव भारत जैसे विकासशील देशों की मुद्राओं पर पड़ता है। यही वजह है कि एशिया में बेहद कमजोर स्थिति वाली मुद्राओं में रुपये भी शामिल है। ऐसी स्थिति में हमारे निर्यात सस्ते और आयात महंगे होने से अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। एक हकीकत यह भी है कि ईरान व अमेरिका के बीच जारी युद्ध से कच्चे तेल की आपूर्ति बाधित होने व पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतें बढ़ने से भी रुपये पर दबाव बढ़ा है। इसकी एक विसंगति यह भी है कि भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का अधिकांश हिस्सा आयात करता है। जिसका प्रतिशत 85 फीसदी के करीब है। फलतः तेल कंपनियां अधिक डॉलर की मांग कर रही हैं,जिसका असर रूपये की सेहत पर भी पड़ रहा है। लेकिन पिछले एक साल में रुपये के मूल्य में दस फीसदी गिरावट और डॉलर के मुकाबले उसका सर्वकालिक निम्न स्तर तक पहुचना हमारी गंभीर चिंता का विषय होना ही चाहिए।

आशंका जतायी जा रही है कि यदि ईरान व अमेरिका का युद्ध और लंबा खिंचता है तो रूपये के मूल्य में और गिरावट दर्ज की जा सकती है। हालांकि, अपनी तरफ से देश के केंद्रीय बैंक ने मौद्रिक व रणनीतिक उपायों से रुपये की गिरावट को थमाने के प्रयास किए हैं, लेकिन उसका सीमित प्रभाव ही रहा है। भले ही भारत के पास सात सौ अरब डॉलर से ज्यादा का विदेशी मुद्रा भंडार हो, लेकिन उसका भी सीमित उपयोग ही रुपये के संरक्षण में हो सकता है। हालांकि, भारत के पास इतना विदेशी मुद्रा का भंडार है कि दस महीने के आयात को सहजता से संचालित किया जा सकता है। वास्तव में वैश्विक परिदृश्य में जारी उथल-पुथल से बाधित आर्थिकी और असुरक्षा के चलते डॉलर की बढ़ती मांग ने रूपये को कमजोर बनाया है। इसके बावजूद केंद्रीय बैंक के हस्तक्षेप से ही रुपये का गिरना संभल सकता है। केंद्रीय बैंक तेल कंपनियों के डॉलर के अतिरिक्त दबाव को कम करने को कदम उठा सकता है। एसबीआई की एक रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि तेल कंपनियों के लिये अलग डॉलर विंडो बनाये जाने से रुपये पर अचानक पड़ने वाला दबाव कम हो सकता है। हर दिन तेल कंपनियों को भारी मात्रा में डॉलर की जरूरत होती है। यही मांग बाजार में रुपये पर अतिरिक्त दबाव बना रही है। रिपोर्ट में एक सुझाव है कि इन कंपनियों के लिए अलग डॉलर विंडो बनाई जाए। अगर ऐसा होता है, तो बाजार में डॉलर की असली मांग और सप्लाई साफ दिखेगी। इससे रुपये पर अचानक पड़ने वाला दबाव कम भी हो सकता है। आर्थिक विशेषज्ञ मानते हैं कि रुपये को 'शॉक एब्जॉर्बर' बनाकर हर दबाव को झेलने के लिये छोड़ देने की नीति पर पुनर्विचार की जरूरत है। जानकार मानते हैं कि इस दिशा में केंद्रीय बैंक को आक्रमक रणनीति अपनानी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग रुपये को संबल देने में करना चाहिए। इसके जरिये टाले जा सकने वाली गिरावट रोकी जा सकती है। इसके लिये अर्थव्यवस्था में नकदी संतुलन भी जरूरी है। बाजार की स्थिरता के लिये ब्याज दरों का संतुलन भी लाभप्रद हो सकता है। जिससे रुपये के कमजोर होने का दबाव अर्थव्यवस्था पर न पड़े।

माओवाद का खात्मा और साय सरकार की पुनर्वास नीति

"इसी तरह झारकंड सरकार ने भी माओवादियों को समर्पण के लिए प्रोत्साहित करने के लिए 'आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति' बनाई। जिसके तहत समर्पण के बाद माओवादियों को आर्थिक सहायता दी जाती है। उनके कौशल विकास के कार्यक्रम चलाए जाते हैं और उन्हें रोजगार के साथ ही आवास की व्यवस्था की जाती है।

कभी देश के एक तिहाई हिस्से पर अपनी समानांतर सरकार चलाने वाली माओवादी विचारधारा का क्या आज अंत हो जाएगा? यह सवाल इसलिए महत्वपूर्ण हो चुका है, क्योंकि नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली केंद्रीय सरकार ने आज ही के दिन को माओवादी आतंकवाद का आखिरी दिन घोषित कर रखा है। ठीक एक हफ्ते पहले यानी 25 मार्च को बस्तर के मुख्यालय जगदलपुर में शीर्ष माओवादी नेता पापा राव के नेतृत्व में 18 माओवादियों ने आत्मसमर्पण किया, तब कहा गया कि राव आखिरी महत्वपूर्ण नक्सली कमांडर हैं और उन्होंने भी हथियार सौंप दिए हैं। 2014 के आम चुनावों में बीजेपी ने अपने घोषणा पत्र में माओवाद पर लगाम का वादा किया था। तब झीरम घाटी कांड की याद ताजा थी, छत्तीसगढ़ कांग्रेस का तकरीबन समूचे शीर्ष नेतृत्व को माओवादियों ने घेरकर मार डाला था। वैसे खुद नक्सली भी मानते रहे हैं कि उनके लिए कांग्रेस और बीजेपी सरकारों में खास अंतर नहीं रहा। अलबत्ता कांग्रेस सरकार माओवादी हिंसा के खिलाफ सख्त कदम उठाने से बचती रही हैं, जिस तरह बीजेपी की अगुआई वाली सरकारें उठाती रही हैं। बस्तर में छह अप्रैल 2010 को बारूदी सुरंगों के जरिए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 76 जवानों को उड़ाने के बाद नक्सलियों के खिलाफ राष्ट्रव्यापी गुस्सा था। तत्कालीन मनमोहन सरकार ने माओवादियों के खिलाफ सैनिक कार्रवाई का मन बना लिया था, लेकिन सिविल सोसायटी के दबाव में यह विचार उसे छोड़ना पड़ा। लेकिन बीजेपी ने माओवादियों को कोई रियायत नहीं दी। 2019 में गृहमंत्रालय की कमान संभालने के बाद अमित शाह ने खुलेआम नक्सलियों को चेतावनी देनी शुरू कर दी कि या तो वे हथियार डालें या फिर गोली खाने के लिए तैयार रहें। इसके साथ ही उन्होंने 31 मार्च 2026 तक माओवादी हिंसा से देश को मुक्त करने का ऐलान कर दिया।

जिस तरह शीर्ष नक्सली कमांडर या तो मारे गए हैं या फिर उन्होंने हथियार डाले हैं, उससे लगता है कि बीजेपी सरकार का अपना वादा पूरा करने जा रही है। माओवादी विचारधारा के प्रभाव में घर-परिवार, सुख-चैन छोड़कर जंगलों की खाक छानने और सत्ता से जूझने वाले माओवादी युवाओं को मुख्यधारा में लाने में सिर्फ केंद्रीय सुरक्षा बलों की गोलियों का दबाव ही काम नहीं आया, बल्कि इसमें राज्यों की पुनर्वास योजनाओं का भी बड़ा योगदान रहा है। छत्तीसगढ़ ने 2025-26 की अपनी पुनर्वास नीति में हिंसा छोड़ने वाले नक्सलियों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए कई कदम उठाए, जिनमें उसका 'पूना मारगेम' अभियान प्रमुख रहा। इन शब्दों का अर्थ है 'नया रास्ता'। इसके तहत दंडकारण्य क्षेत्र के सैकड़ों माओवादी कैडरों को मुख्यधारा में वापस लाने की सफल कोशिश हुई। इसके तहत नक्सलियों की वापसी के बाद उन्हें नई जिंदगी शुरू करने के लिए तत्काल डेढ़ लाख रूपए तक की आर्थिक सहायता दी गई, साथ ही उन्हें तीन साल के लिए मासिक वजीफा और व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाना शुरू हुआ। मकसद यह रहा कि हथियार छोड़ने के बाद मुख्यधारा में लौटे माओवादी आत्मनिर्भर जिंदगी बिता सकें। छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव साय सरकार ने हथियार सौंपने वाले माओवादियों को अलग से प्रोत्साहन राशि देने की भी व्यवस्था की। इससे राज्य में माओवादियों के समर्पण में तेजी आई। हथियार छोड़ने वाले माओवादियों के बच्चों की शिक्षा का इंतजाम किया गया, इसके साथ ही उन्हें सुरक्षित आवास भी मुहैया कराए गए। इसके साथ ही उन्हें वापसी के बाद भयमुक्त जीवन गुजारने के लिए परिवार की सुरक्षा की गारंटी भी दी गई। इसी तरह झारकंड सरकार ने भी माओवादियों को समर्पण के लिए प्रोत्साहित करने के लिए 'आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति' बनाई। जिसके तहत समर्पण के बाद माओवादियों को आर्थिक सहायता दी जाती है। उनके कौशल विकास के कार्यक्रम चलाए जाते हैं और उन्हें रोजगार के साथ ही आवास की व्यवस्था की जाती है। साथ ही उन्हें और उनके परिवार को सुरक्षा की गारंटी दी जाती है। झारखंड की इस नीति का उद्देश्य समर्पित नक्सलियों को सम्मानजनक जीवन जीने के लिए आत्मनिर्भर बनाना है। इसके तहत हथियार जमा करने पर पूर्व नक्सलियों को प्रोत्साहन राशि, उन्हें तत्काल पुनर्वास अनुदान और घरेलू सामान के लिए नकद सहायता दी जाती है। साथ ही उनको कौशल प्रशिक्षण दिया जाता है, ताकि वे भविष्य में अपना रोजगार कर सकें। इसके साथ ही उनके बच्चों को मुफ्त शिक्षा व छात्रवृत्ति की सुविधा भी दी जाती है। उन्हें आवास के लिए भूमि या प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घर भी दिए जाते हैं। इसी तरह मुख्यधारा में लौटे नक्सलियों को खेती के लिए प्राथमिकता के आधार पर सोलर पंप और बिजली कनेक्शन भी देने का इंतजाम है। पूर्व नक्सलियों पर चल रहे छोटे मामलों को झारखंड सरकार जहां वापस ले रही है, वहीं गंभीर मामलों में कानूनी सहायता मुहैया करा रही है। कुछ ऐसे ही इंतजाम पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में किए गए हैं। कभी माओवादियों के डर से बस्तर में सड़कें तक बनाना संभव नहीं था, बिजली पहुंचाना भी कठिन था। झारखंड के भी दूरदराज के इलाके में ऐसा ही हाल था। लेकिन केंद्र सरकार की शह पर राज्य सरकार ने नक्सली हिंसा प्रभावित क्षेत्र में भी सड़क, स्कूल और अस्पतालों का निर्माण कराने में तेजी आई। बस्तर के कुछ इलाके में रेलवे लाइन भी पहुंच गई है। नक्सली इलाके में सड़कें भी बेहतर हो गई हैं। इन कदमों से माओवादी प्रभाव में रहने वाले इलाकों में भरोसा बहाली में मदद मिली। सरकारी योजनाओं के साथ ही सरकार के प्रति भी स्थानीय लोगों का रवैया बदला।

कभी पशुपति से तिरुपति यानी नेपाल से आंध्र तक का जंगली इलाका लाल गलियारे के रूप में विख्यात था। यहां सुरक्षा बलों के लिए भी घुसना आसान नहीं था। इसमें देश के तकरीबन एक तिहाई जिले आते थे। इन जिलों में माओवादी वैचारिकी के असर वाले हथियारबंद दस्तों की सत्ता चलती थी। माओवादी स्कूलों, रेलवे लाइनों, पुलिस थानों, डाकघरों को निशाना बनाते थे। साथ ही वे इलाके की जनता को यह समझाने में कामयाब रहे थे कि मौजूदा व्यवस्था और तंत्र सिर्फ और सिर्फ उनका शोषण ही कर रहा है। चूंकि विकास की धारा इन इलाकों में माओवादी हथियारबंद दस्तों के अवरोध के चलते बह नहीं पा रही थी, इसलिए अविश्वास का माहौल बढ़ता रहा। लेकिन मोदी सरकार ने सत्ता संभालते ही एक तरफ माओवादियों को उन्हीं की तर्ज में गोली का जवाब गोली से देना शुरू किया, वहीं दूसरी तरफ उनके पुनर्वास के साथ ही नक्सल प्रभावित इलाकों में विकास की धारा को भी बहाने की कोशिश तेज की। माओवादी कहते रहे हैं कि सत्ता की राह बंदूक की गोली से निकलती है, बारूद से निकलती है, मोदी सरकार ने कुछ उसी अंदाज में माओवादी सत्ता की राह को बंदूक और बारूद से रोका, लेकिन दूसरी तरफ पुनर्वास अभियान भी जारी रखा। इसमें राज्यों की भूमिका खास रही। चूंकि छत्तीसगढ़ और झारखंड नक्सली हिंसा से सबसे ज्यादा प्रभावित रहे हैं, इसलिए दोनों राज्यों ने इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जिसका नतीजा सामने है।

कभी पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी से शुरू हिंसक और माओवादी विचारधारा का असर देश के एक तिहाई हिस्से पर रहा। लेकिन अब यह विचारधारा और उसके हथियारबंद अनुयायी निस्तेज नजर आ रहे हैं। कह सकते हैं कि वामपंथ की तरह माओवादी विचारधारा भी भारत में कुंद हो गई। नक्सली हिंसा पर लगाम इस लगाम का ही प्रतीक है। वैसे यह भी सच है कि विचारधाराएं कभी नहीं मरतीं, एक विचारधारा के रूप में वह माओवाद भी जिंदा रह सकता है। लेकिन अब उसके उस तरह प्रतिबद्ध अनुयायी नहीं होंगे, उनकी गोलियों की आवाज और धमक भी नहीं होगी। अगर यह विचारधारा लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोकतांत्रिक तरीके से आगे बढ़े तो शायद ही किसी को एतराज होगा। उम्मीद की जानी चाहिए कि अगर यह विचारधारा जिंदा भी बचती है तो वह लोकतांत्रिक ढंग से आगे बढ़ेगी, हथियारों के दम पर नहीं।

प्रेरणा

समय ही जीवन का वास्तविक धन है

मानव जीवन में यदि किसी एक तत्व को सबसे अधिक मूल्यवान कहा जाए, तो वह निस्संदेह समय है। धन, संपत्ति, पद और प्रतिष्ठा सब कुछ खोकर भी पुनः प्राप्त किए जा सकते हैं, किन्तु बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। यही कारण है कि हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर आधुनिक युग के महान व्यक्तित्वों तक सभी ने समय की महत्ता को सर्वोपरि माना है। समय न केवल हमारे कार्यों की गति निर्धारित करता है, बल्कि यह हमारे व्यक्तित्व, चरित्र और सफलता का भी आधार बनता है। जो व्यक्ति समय का सम्मान करता है, समय भी उसे उसी अनुपात में सम्मान देता है, और जो समय की उपेक्षा करता है, वह जीवन की दौड़ में पीछे रह जाता है। इसी सत्य को अपने जीवन में आत्मसात करने वाले एक महान व्यक्तित्व थे पद्मभूषण से सम्मानित प्रसिद्ध शिक्षाविद और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर अमरकांत झा। वे समय के इतने पाबंद थे कि उनके जीवन का प्रत्येक क्षण अनुशासन और नियमबद्धता का प्रतीक था। उनके लिए समय का पालन केवल एक आदत नहीं, बल्कि एक नैतिक कर्तव्य था। उनके जीवन की एक छोटी-सी घटना हमें समय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती है।

एक बार पटना के कुछ साहित्यकारों ने एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया। यह गोष्ठी न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी, बल्कि उसमें कई प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों के शामिल होने की संभावना भी थी। आयोजकों ने इस कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाने के लिए डॉक्टर अमरकांत झा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। डॉक्टर साहब ने इस निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया, किन्तु उन्होंने एक छोटी-सी शर्त रखी। उन्होंने आयोजकों से निवेदन किया कि गोष्ठी के निर्धारित समय से आधा घंटा पहले किसी व्यक्ति को उनके निवास स्थान पर भेज दिया जाए, ताकि वे समय से कार्यक्रम स्थल पर पहुंच सकें।

गोष्ठी के दिन डॉक्टर साहब समय से पहले ही तैयार होकर अपने घर पर प्रतीक्षा करने लगे। उनकी यह तैयारी यह दर्शाती है कि वे न केवल अपने समय का सम्मान करते थे, बल्कि दूसरों के समय को भी उतना ही महत्व देते थे। उनके लिए समय का पालन एक प्रकार का अनुशासन था, जो व्यक्ति को आत्मविश्वासी और विश्वसनीय बनाता है। किन्तु दुर्भाग्यवश, उन्हें लेने आने वाला व्यक्ति निर्धारित समय पर नहीं पहुंचा। वह लगभग एक घंटे की देरी से उनके घर पहुंचा और अपनी देरी के लिए क्षमा मांगने लगा।

यह स्थिति सामान्यतः किसी भी व्यक्ति को असहज कर सकती थी, किन्तु डॉक्टर अमरकांत झा ने जो निर्णय लिया, वह उनके व्यक्तित्व की दृढ़ता और सिद्धांतों की स्पष्टता को दर्शाता है। उन्होंने उस व्यक्ति के साथ जाने से साफ मना कर दिया। जब वह व्यक्ति गिड़गिड़ाकर उनसे आग्रह करने लगा कि उनके न जाने से कार्यक्रम पूरी तरह विफल हो जाएगा, तब डॉक्टर साहब ने अत्यंत शांत और स्पष्ट शब्दों में कहा कि उन्हें कार्यक्रम के चौपट हो जाने का खेद अवश्य होगा, किन्तु वे स्वयं को लेट-लतीफ कहलवाना बिल्कुल स्वीकार नहीं कर सकते।

यह घटना केवल एक व्यक्ति के निर्णय की कहानी नहीं है, बल्कि यह समय के प्रति एक गहरी चेतना का संदेश देती है। डॉक्टर अमरकांत झा ने यह स्पष्ट कर दिया कि समय की पाबंदी केवल व्यक्तिगत अनुशासन नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है। जब हम किसी कार्यक्रम में देरी से पहुंचते हैं, तो हम केवल अपना समय नहीं गंवाते, बल्कि दूसरों के समय का भी अपमान करते हैं। समय की यह अनदेखी धीरे-धीरे हमारे व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डालती है और हमें अविश्वसनीय बना देती है।

आज के आधुनिक युग में, जहां तकनीक ने हमारे जीवन को अत्यंत तेज और सुविधाजनक बना दिया है, वहीं समय के प्रति हमारी लापरवाही भी बढ़ती जा रही है। लोग अक्सर देर से पहुंचने को सामान्य बात मान लेते हैं और इसे गंभीरता से नहीं लेते। किन्तु यह आदत धीरे-धीरे हमारे जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। समय की अवहेलना करने वाला व्यक्ति अपने अवसरों को स्वयं ही नष्ट कर देता है, क्योंकि अवसर भी समय के साथ ही आते हैं और चले जाते हैं।

समय का सही उपयोग ही सफलता की कुंजी है। जो व्यक्ति अपने दिनचर्या को व्यवस्थित करता है, अपने कार्यों को प्राथमिकता देता है और समय का सदुपयोग करता है, वही जीवन में आगे बढ़ता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति समय को व्यर्थ गंवाता है, वह धीरे-धीरे अपने लक्ष्यों से दूर होता चला जाता है। समय की महत्ता को समझने का अर्थ केवल घड़ी देखना नहीं है, बल्कि अपने प्रत्येक क्षण को सार्थक बनाना है।

डॉक्टर अमरकांत झा की यह घटना हमें यह भी सिखाती है कि सिद्धांतों पर अडिग रहना कितना महत्वपूर्ण है। यदि वे उस दिन समझौता कर लेते और देरी के बावजूद कार्यक्रम में चले जाते, तो संभवतः आयोजकों को राहत मिल जाती, किन्तु उनके अपने सिद्धांत कमजोर पड़ जाते। उन्होंने अपने व्यवहार से यह सिद्ध कर दिया कि जीवन में कुछ मूल्यों के साथ कभी समझौता नहीं करना चाहिए, चाहे परिस्थिति कितनी ही कठिन क्यों न हो।

समय हमें निरंतर आगे बढ़ने का संकेत देता है। यह किसी के लिए रुकता नहीं, न ही किसी के लिए बदलता है। इसलिए यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम समय के साथ चलना सीखें या फिर उससे पीछे रह जाएं। जो लोग समय के महत्व को समझते हैं, वे अपने जीवन को दिशा देते हैं, जबकि जो इसे नजरअंदाज करते हैं, वे भटक जाते हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि समय ही जीवन का सबसे बड़ा शिक्षक है। यह हमें अनुशासन, जिम्मेदारी और कर्मठता का पाठ पढ़ाता है। यदि हम समय का सम्मान करना सीख लें, तो जीवन के अधिकांश संघर्ष अपने आप सरल हो जाते हैं। डॉक्टर अमरकांत झा जैसे महान व्यक्तित्व हमें यही प्रेरणा देते हैं कि समय का पालन केवल एक आदत नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन है। उनके इस छोटे-से निर्णय में एक बड़ा संदेश छिपा है, जो हमें यह सिखाता है कि समय के प्रति सजग रहकर ही हम अपने जीवन को सार्थक और सफल बना सकते हैं।

सेहत-पर्यावरण को लील रहे कचरे के ढेर

विश्व बैंक और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) की ताज़ा रिपोर्टें संकेत करती हैं कि दुनिया तेजी से कचरे के ऐसे संकट की ओर बढ़ रही है, जो आने वाले दशकों में पर्यावरण, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। वर्ष 2022 में दुनिया में लगभग 2.6 अरब टन कचरा उत्पन्न हुआ, जो 2050 तक बढ़कर 3.9 अरब टन तक पहुंचने की आशंका है। इसी क्रम में यूएनईपी की 'फूड वेस्ट इंडेक्स रिपोर्ट' बताती है कि हर वर्ष लगभग 1 अरब टन भोजन बर्बाद होता है, जिसका लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा घरों से आता है। यह स्थिति संसाधनों की भारी बर्बादी व समाज की उपभोग-प्रधान मानसिकता उजागर करती है। कचरे के बढ़ते ढेर केवल अस्वच्छता का प्रतीक नहीं , बल्कि वे पर्यावरण के लिए गंभीर वैज्ञानिक खतरा उत्पन्न करते हैं। विश्व बैंक की 'व्हाट अ वेस्ट' रिपोर्ट और यूएनईपी की 'ग्लोबल वेस्ट मैनेजमेंट आउटलुक' रिपोर्ट स्पष्ट करती हैं कि लैंडफिल में जमे जैविक कचरे के सड़ने से मीथेन गैस निकलती है। यह ग्रीनहाउस गैस वैश्विक तापवृद्धि तेज करती है। इसके अलावा, कचरे के अनुचित निपटान से मिट्टी और भूजल प्रदूषित होते हैं, जिससे कृषि और मानव स्वास्थ्य दोनों प्रभावित होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, खुले में कचरा जलाने से निकलने वाली विषैली गैसें और सूक्ष्म कण गंभीर बीमारियों को बढ़ावा देते हैं। प्लास्टिक कचरे के विघटन से उत्पन्न सूक्ष्म कण जल स्रोतों में मिलकर खाद्य श्रृंखला का हिस्सा बन जाते हैं, जो मानव जीवन के लिए खतरा बनते हैं। अहम प्रश्न है कि कचरे के ढेर आखिर किन कारणों से निरंतर बढ़ रहे हैं। इसका उत्तर हमारी उपभोक्तावादी संस्कृति में निहित है, जो निरंतर अधिक से अधिक उपभोग करने के लिए प्रेरित करती है। समाजशास्त्री जिग्मुंट बॉमन के अनुसार, आधुनिक समाज एक 'उपभोक्ता समाज' में परिवर्तित हो चुका है, जहां वस्तुओं का निर्माण दीर्घकालिक उपयोग के लिए नहीं, बल्कि शीघ्र त्याग के लिए किया जाता है। यूएनईपी की 'ग्लोबल वेस्ट मैनेजमेंट आउटलुक 2024' रिपोर्ट स्पष्ट करती है कि वर्तमान 'उत्पादन–उपभोग–त्याग' आधारित अर्थव्यवस्था में निर्मित अधिकांश वस्तुएं अंततः कचरे में बदल जाती हैं। यदि यह मॉडल जारी रहा, तो कचरे की मात्रा और उससे जुड़े पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक दुष्प्रभाव लगातार बढ़ते जाएंगे। विश्व बैंक की 'व्हाट अ वेस्ट' रिपोर्ट यह संकेत देती है कि आर्थिक विकास, शहरीकरण और बढ़ते उपभोग के साथ कचरे की मात्रा में भी निरंतर वृद्धि होती है। इसी प्रकार, यूएनईपी रेखांकित करता है कि वर्तमान अस्थिर उपभोग और उत्पादन की प्रवृत्तियां कचरे के बढ़ते संकट का प्रमुख कारण हैं। 'ग्लोबल वेस्ट मैनेजमेंट आउटलुक' रिपोर्ट में रेखांकित किया गया है कि टिकाऊ समाधान के रूप में पुनः उपयोग, मरम्मत और पुनर्चक्रण जैसी प्रक्रियाओं को अपनाना आवश्यक है।

जहां पारंपरिक समाजों में वस्तुओं का उपयोग अधिक टिकाऊ और पुनः उपयोग पर आधारित था, वहीं आधुनिक उपभोग-प्रधान जीवनशैली ने इस संतुलन को समाप्त कर दिया। विश्व स्तर पर सीमित और सजग उपभोग को बढ़ावा देने के लिए कई संगठित प्रयास किए गए हैं। 'जीरो वेस्ट' आंदोलन, जिसे 21वीं सदी के प्रारंभ में संस्थागत रूप मिला, इस विचार को स्थापित करता है कि कचरे को न्यूनतम स्तर तक लाया जा सकता है। वहीं, वर्ष 2011 में ऑस्ट्रेलिया से शुरू हुआ 'प्लास्टिक फ्री जुलाई' अभियान आज वैश्विक स्तर पर लोगों को सिंगल-यूज़ प्लास्टिक से दूरी बनाने को प्रेरित कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2022 में 'इंटरनेशनल जीरो वेस्ट डे' की घोषणा दर्शाती है कि यह विषय अब वैश्विक प्राथमिकता है। इन आंदोलनों ने इस दिशा में जागरूकता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई लेकिन केवल आंदोलनों के जरिये इस समस्या का पूर्ण समाधान संभव नहीं है। इसके प्रभावी नियंत्रण के लिए हमें अपनी जीवनशैली और उपभोग के तरीकों में परिवर्तन लाना होगा। वास्तव में, यह समस्या बाहर से अधिक भीतर से जुड़ी हुई है। हम कैसे जीते हैं, क्या खरीदते हैं और कितना त्याग करते हैं। ऐसे में आवश्यक है कि हम ऐसे जीवन मूल्यों को अपनाएं, जो संतुलन और संयम पर आधारित हों। समझना होगा कि अत्यधिक उपभोग केवल तात्कालिक सुविधा प्रदान करता है, जबकि दीर्घकाल में यह पर्यावरणीय असंतुलन और संसाधनों के क्षय का कारण बनता है। जापान जैसे देश यह उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि सादगी, अनुशासन और संतुलित जीवनशैली भी एक समृद्ध और सम्मानित समाज की पहचान हो सकती है। जापानी जीवनशैली का न्यूनतावादी दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण दिशा प्रस्तुत करता है। मैरी कोंडो की पुस्तक 'द लाइफ-चेंजिंग मैजिक ऑफ टाइडिंग अप' के मुताबिक, व्यक्ति को केवल उन्हीं वस्तुओं को पास रखना चाहिए, जो वास्तव में आवश्यक हों। यह दृष्टिकोण अनावश्यक संग्रह की प्रवृत्ति को सीमित कर कचरे की समस्या को कम करने में सहायक होगा। 1980 में प्रकाशित विलियम आर. कैटन की पुस्तक 'ओवरशूट : द इकोलॉजिकल बेसिस ऑफ रिवोल्यूशनरी चेंज' चेताती है कि मानव समाज पृथ्वी की वहन क्षमता से अधिक संसाधनों का उपभोग कर रहा है। इस प्रवृत्ति को नहीं रोका गया, तो यह भविष्य में गंभीर पारिस्थितिक संकट का कारण बनेगी। यह चेतावनी केवल भविष्य की आशंका नहीं, बल्कि एक संभावित वास्तविकता की ओर संकेत करती है।

अभियान

महापुराणों का दिव्य रहस्य: सनातन ज्ञान में छिपा जीवन का संपूर्ण दर्शन

सनातन धर्म की परंपरा केवल आस्था या पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा व्यापक जीवन-दर्शन है, जिसमें ब्रह्मांड, प्रकृति, आत्मा और परमात्मा के बीच के गहरे संबंधों को समझाया गया है। इस महान परंपरा में वेदों के पश्चात जिन ग्रंथों को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, वे हैं अठारह महापुराण। ये महापुराण केवल धार्मिक आख्यानों का संग्रह नहीं हैं, बल्कि इनमें जीवन के गूढ़ रहस्य, नैतिक मूल्यों का सार, सृष्टि का विज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग अत्यंत सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। यही कारण है कि इन्हें "दिव्य ज्ञान का भंडार" कहा जाता है। महापुराणों की रचना का उद्देश्य यह था कि वेदों के जटिल और गूढ़ ज्ञान को आम जनमानस तक सरल और रोचक रूप में पहुंचाया जा सके। वेद जहां अत्यंत दार्शनिक और सूक्ष्म हैं, वहीं पुराण कथाओं, संवादों और उदाहरणों के माध्यम से उन्हीं सिद्धांतों को सहजता से समझाते हैं। महर्षि वेदव्यास को इन पुराणों का रचयिता माना जाता है, जिन्होंने मानवता के कल्याण के लिए इस ज्ञान को संरक्षित और प्रसारित किया। इन पुराणों में न केवल देवताओं और ऋषियों की कथाएं हैं, बल्कि इसमें इतिहास, भूगोल, खगोल, समाज व्यवस्था और धर्म के विभिन्न आयामों का विस्तृत वर्णन भी मिलता है।

अठारह महापुराणों में ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, नारद पुराण, मार्कंडेय पुराण, अग्नि पुराण, भविष्य पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, लिंग पुराण, वराह पुराण, स्कंद पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण और ब्रह्मांड पुराण सम्मिलित हैं। प्रत्येक पुराण का अपना विशिष्ट दृष्टिकोण और उद्देश्य है, जो जीवन और ब्रह्मांड के किसी न किसी पहलू को गहराई से उजागर करता है। इन ग्रंथों को तीन प्रमुख गुणों—सत्त्व, रजस और तमस—के आधार पर भी वर्गीकृत किया गया है, जो यह दर्शाता है कि वे मानव स्वभाव और चेतना के विभिन्न स्तरों को कैसे प्रभावित करते हैं।

महापुराणों में सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन अत्यंत रोचक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया गया है। इसमें बताया गया है कि ब्रह्मांड की रचना कैसे हुई, समय का चक्र कैसे चलता है, और कैसे सृष्टि का निर्माण, पालन और संहार होता है। यह ज्ञान हमें यह समझने में सहायता करता है कि जीवन एक निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है और हर चीज एक निश्चित नियम के अंतर्गत संचालित होती है। इस दृष्टिकोण से देखने पर हमें यह एहसास होता है कि जीवन में होने वाली हर घटना का एक गहरा अर्थ और उद्देश्य होता है।

इन पुराणों में धर्म की व्याख्या भी अत्यंत व्यापक रूप में की गई है। धर्म का अर्थ केवल पूजा या अनुष्ठान करना नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मार्ग है, जो हमें सत्य, न्याय और कर्तव्य की ओर ले जाता है। महापुराण हमें सिखाते हैं कि सच्चा धर्म वही है, जो दूसरों के कल्याण में सहायक हो और जिसमें दया, करुणा, सत्य और अहिंसा जैसे गुण समाहित हों। यह हमें यह भी सिखाते हैं कि धर्म का पालन केवल बाहरी आडंबर से नहीं, बल्कि आंतरिक शुद्धता और सच्चे भाव से होना चाहिए।

भक्ति का तत्व भी महापुराणों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। इन ग्रंथों में भगवान की लीलाओं और उनके भक्तों के साथ संबंधों का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है। यह हमें यह सिखाता है कि ईश्वर तक पहुंचने का सबसे सरल और प्रभावी मार्ग भक्ति है। जब मनुष्य अपने अहंकार को त्यागकर पूर्ण समर्पण के साथ ईश्वर की शरण में जाता है, तब उसे सच्चा आनंद और शांति प्राप्त होती है। भक्ति केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं है, बल्कि यह एक गहरा भाव है, जो आत्मा को परमात्मा से जोड़ता है।

महापुराणों में कर्म सिद्धांत का भी गहन विश्लेषण किया गया है। यह सिद्धांत हमें यह सिखाता है कि हर कर्म का एक परिणाम होता है और व्यक्ति को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। यह ज्ञान हमें अपने कार्यों के प्रति सजग और जिम्मेदार बनाता है। जब हम यह समझते हैं कि हमारे हर कार्य का प्रभाव हमारे जीवन और भविष्य पर पड़ता है, तब हम अधिक सतर्क और सकारात्मक निर्णय लेने लगते हैं।

इन ग्रंथों में वर्णित कथाएं केवल धार्मिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि इनमें जीवन के व्यावहारिक पहलुओं को भी बड़ी सुंदरता से समझाया गया है। राजा-रानी, ऋषि-मुनि, देवता और असुरों की कहानियों के माध्यम से यह बताया गया है कि कैसे अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष होता है और अंततः सत्य और धर्म की ही विजय होती है। ये कथाएं हमें प्रेरित करती हैं कि हम अपने जीवन में सदैव सत्य और धर्म का पालन करें, चाहे परिस्थितियां कितनी ही कठिन क्यों न हों।

महापुराणों का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इनमें जीवन के चार पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—का संतुलन बताया गया है। ये चारों तत्व जीवन को पूर्ण और संतुलित बनाते हैं। धर्म हमें सही मार्ग दिखाता है, अर्थ हमें जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करता है, काम हमारी इच्छाओं और भावनाओं को संतुलित करता है और मोक्ष हमें जन्म-मरण के चक्र से मुक्त करता है। इन चारों का संतुलन ही जीवन की सच्ची सफलता और संतुष्टि का आधार है।

आज के आधुनिक युग में, जब मनुष्य भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे भाग रहा है और मानसिक तनाव, असंतोष और भ्रम का शिकार हो रहा है, तब महापुराणों का ज्ञान अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। ये ग्रंथ हमें यह सिखाते हैं कि सच्चा सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारे भीतर है। जब हम अपने मन को शांत और संतुलित रखते हैं, तब ही हम जीवन के वास्तविक आनंद का अनुभव कर सकते हैं। महापुराणों का अध्ययन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह आत्म-चिंतन और आत्म-विकास का एक सशक्त माध्यम है। यह हमें हमारे अस्तित्व, उद्देश्य और जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने में सहायता करता है। जब हम इन ग्रंथों के ज्ञान को अपने जीवन में उतारते हैं, तो हम न केवल एक बेहतर इंसान बनते हैं, बल्कि हम अपने जीवन को अधिक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण बना सकते हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि सनातन धर्म के अठारह महापुराण मानवता के लिए एक अमूल्य धरोहर हैं। इनमें निहित ज्ञान समय और स्थान की सीमाओं से परे है और हर युग में प्रासंगिक बना रहता है। ये ग्रंथ हमें सत्य, धर्म, भक्ति और ज्ञान के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं और हमें यह सिखाते हैं कि जीवन को कैसे संतुलित, सार्थक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाया जाए। जो व्यक्ति इन महापुराणों के ज्ञान को समझता है और उसे अपने जीवन में अपनाता है, वह न केवल स्वयं का उत्थान करता है, बल्कि समाज और विश्व के कल्याण में भी योगदान देता है। यही इन दिव्य ग्रंथों का वास्तविक उद्देश्य और उनकी महानता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

देशभक्ति की गूंज से सराबोर राजकोट: 'वंदे मातरम@150 साल' अभियान ने जगाई राष्ट्रीय चेतना की नई लहर

राजकोट। जब किसी राष्ट्र की आत्मा को उसके इतिहास, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम की स्मृतियों से जोड़ने की बात आती है, तो 'वंदे मातरम' जैसे गीत केवल शब्द नहीं रह जाते, बल्कि वे जन-जन की भावना और पहचान का प्रतीक बन जाते हैं। इसी भावना को सशक्त रूप देने के लिए राजकोट जिले में 'वंदे मातरम@150 साल' अभियान के तहत भव्य और व्यापक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसने पूरे क्षेत्र को देशभक्ति के रंग में रंग दिया। यह आयोजन केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि एक ऐसा जनांदोलन बन गया, जिसमें हर वर्ग के लोगों ने अपनी भागीदारी से इसे यादगार बना दिया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 'वंदे मातरम' ने जिस प्रकार क्रांतिकारियों के भीतर जोश और समर्पण की भावना जगाई थी, उसी विरासत को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से इस अभियान की शुरुआत की गई। 150 वर्ष पूरे होने के इस विशेष अवसर पर गुजरात राज्य में इसे एक व्यापक रूप दिया गया, जिसमें राजकोट जिले ने अग्रणी भूमिका निभाई। यहां आयोजित कार्यक्रमों में न केवल देशभक्ति का उत्साह देखने को मिला, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक समरसता का भी अद्भुत संगम नजर आया।

अभियान के दूसरे चरण के अंतर्गत 23 से 31 मार्च 2026 तक विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें सामूहिक गायन, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, रैलियां और जागरूकता कार्यक्रम शामिल थे। राजकोट शहर और आसपास के क्षेत्रों में इन कार्यक्रमों ने एक उत्सव का रूप ले लिया। सड़कों से लेकर शैक्षणिक संस्थानों तक हर जगह 'वंदे मातरम' की गूंज सुनाई दी। युवाओं, विद्यार्थियों, सरकारी कर्मचारियों और आम नागरिकों ने जिस उत्साह के साथ इसमें भाग लिया, वह इस बात का प्रमाण था कि देशभक्ति आज भी लोगों के दिलों में उतनी ही गहराई से बसती है।

इस अभियान का एक विशेष आकर्षण वह क्षण रहा, जब मुख्यमंत्री भूपेंद्रभाई पटेल द्वारा 751 करोड़ रुपये के विकास कार्यों के उद्घाटन के अवसर पर राजकोट अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री राममोहन नायडू किंजरापु की अध्यक्षता में हजारों लोगों ने एक साथ 'वंदे मातरम' का सामूहिक गायन किया। यह दृश्य केवल एक कार्यक्रम का हिस्सा नहीं था, बल्कि वह एक ऐसा भावनात्मक क्षण था, जिसने वहां उपस्थित हर व्यक्ति को गर्व और उत्साह से भर दिया। एक साथ गूंजती आवाजों ने यह संदेश दिया कि देश की एकता और अखंडता के लिए सामूहिक चेतना कितनी महत्वपूर्ण है।

इसी तरह हेमू गढ़वी हॉल में आयोजित नाट्य कार्यक्रम के दौरान भी देशभक्ति का माहौल अपने चरम पर था। जब कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों ने एक साथ राष्ट्रगान गाया, तो पूरा वातावरण एक अद्भुत ऊर्जा से भर गया। यह दृश्य यह दर्शाता है कि सांस्कृतिक कार्यक्रम केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं होते, बल्कि वे समाज में जागरूकता और भावनात्मक जुड़ाव का भी महत्वपूर्ण साधन होते हैं।

युवा वर्ग को इस अभियान से जोड़ने के लिए विशेष प्रयास किए गए। जिला युवा विकास अधिकारी हितेशभाई दिहोरा के मार्गदर्शन में के.एस.एन. कंसागरा महिला महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों ने युवाओं के भीतर राष्ट्रीय गौरव की भावना को और मजबूत किया। यहां आयोजित समूह गान और मार्च में छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और देशभक्ति के नारों के साथ जनजागरण किया। जब सैकड़ों छात्र-छात्राएं एक साथ 'वंदे मातरम' गाते हुए आगे बढ़े, तो वह दृश्य हर व्यक्ति के मन में गर्व की भावना जगाने के लिए पर्याप्त था।

अभियान के तहत केवल बड़े आयोजन ही नहीं, बल्कि छोटे-छोटे कार्यक्रमों के माध्यम से भी लोगों को जोड़ा गया। राज्यभर के स्कूलों और कॉलेजों में निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, चित्रकला और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया। इन गतिविधियों ने विद्यार्थियों को न केवल अपने इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम के बारे में जानने का अवसर दिया, बल्कि उन्हें अपनी रचनात्मकता के माध्यम से देशभक्ति की भावना व्यक्त करने का मंच भी प्रदान किया।

इस पूरे अभियान की सबसे बड़ी खासियत इसकी जनभागीदारी रही। सरकारी संस्थानों, स्वयंसेवी संगठनों और आम नागरिकों ने मिलकर इसे एक जनोत्सव का रूप दिया। हर वर्ग के लोगों ने इसमें अपनी भूमिका निभाई और मातृभूमि के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। यह आयोजन इस बात का उदाहरण बन गया कि जब समाज एकजुट होकर किसी उद्देश्य के लिए कार्य करता है, तो वह एक बड़े परिवर्तन का कारण बन सकता है।

आज के समय में जब आधुनिक जीवनशैली और व्यस्तता के कारण लोग अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होते जा रहे हैं, ऐसे अभियान उन्हें अपनी पहचान और विरासत से जोड़ने का काम करते हैं। 'वंदे मातरम@150 साल' अभियान ने न केवल लोगों को देशभक्ति की भावना से जोड़ा, बल्कि उन्हें यह भी याद दिलाया कि स्वतंत्रता केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि एक सतत जिम्मेदारी है, जिसे हर पीढ़ी को निभाना होता है।

छोटी कीमत, बड़ा खजाना: वडोदरा के इंजीनियर ने 82 देशों के '1' नोटों से रच दी अनोखी दुनिया

वडोदरा। जहां आमतौर पर लोग बड़ी कीमत वाली चीजों को संग्रह करने में रुचि रखते हैं, वहीं वडोदरा के सिविल इंजीनियर फैजल दूधवाला ने एक ऐसा रास्ता चुना, जो न केवल अलग है बल्कि गहरी सोच और प्रतीकात्मकता से भी जुड़ा हुआ है। उन्होंने दुनिया के 82 देशों के '1' मूल्य के नोटों का संग्रह तैयार कर एक अनोखी पहचान बनाई है। यह संग्रह सिर्फ कागज के टुकड़ों का ढेर नहीं, बल्कि वैश्विक इतिहास, अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक विविधता का जीवंत दस्तावेज बन चुका है।

फैजल दूधवाला का यह सफर किसी बड़े संसाधन या योजना से नहीं, बल्कि एक साधारण शौक से शुरू हुआ था। बचपन से ही उन्हें सिक्कों, करेंसी और पुरानी वस्तुओं को इकट्ठा करने का शौक था। यह रुचि उन्हें विरासत में मिली, क्योंकि उनके पिता भी ऐसे संग्रहों में दिलचस्पी रखते थे। बचपन में पिता के कलेक्शन को देखते हुए उनके मन में जिज्ञासा जागी, जो समय के साथ एक जुनून में बदल गई। हालांकि, इस शौक को उन्होंने गंभीर रूप तब दिया, जब कोरोना काल के दौरान लगे लॉकडाउन ने उन्हें समय और अवसर दोनों दिए।

लॉकडाउन के दौरान जब पूरी दुनिया ठहर सी गई थी, तब फैजल ने अपने भीतर के

कलेक्टर को पहचानने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने पिता के संग्रह को दोबारा खंगाला और वहीं से उन्हें '1' मूल्य के नोटों का कलेक्शन बनाने का विचार आया। यह विचार जितना सरल था, उतना ही अनोखा भी, क्योंकि आमतौर पर लोग बड़े मूल्य के नोटों या दुर्लभ सिक्कों को प्राथमिकता देते हैं। लेकिन फैजल ने सबसे छोटी मुद्रा में सबसे बड़ी कहानी देखने की कोशिश की।

धीरे-धीरे उन्होंने अपने मित्रों, खासकर विदेशों में रहने वाले परिचितों की मदद से विभिन्न देशों के '1' मूल्य के नोट इकट्ठा करने शुरू किए। देखते ही देखते यह शौक एक बड़े कलेक्शन में बदल गया, जिसमें एशिया, अफ्रीका, यूरोप, उत्तर और दक्षिण अमेरिका तथा ओशिनिया के देशों की मुद्राएं शामिल हो गईं। उनके इस संग्रह की खास बात यह है कि इसमें केवल वर्तमान देशों के नोट ही नहीं, बल्कि उन देशों के भी नोट शामिल हैं जो अब अस्तित्व में नहीं हैं या किसी अन्य देश में विलय हो चुके हैं। इस तरह यह संग्रह एक ऐतिहासिक दस्तावेज का रूप ले लेता है, जो दुनिया के बदलते नक्शे और राजनीतिक परिवर्तनों की झलक भी दिखाता है।

फैजल के अनुसार '1' संख्या उनके लिए केवल एक अंक नहीं, बल्कि एक दर्शन है। उनके लिए यह नई शुरुआत, एकता और मूलभूत आधार का प्रतीक है। वे मानते हैं कि किसी भी बड़ी चीज की शुरुआत '1' से ही होती है, और यही विचार उनके पूरे कलेक्शन का केंद्र है। उनका यह दृष्टिकोण उनके संग्रह को और भी खास बना देता है, क्योंकि इसमें केवल वस्तुएं ही नहीं, बल्कि एक गहरी सोच भी शामिल है।

आज के समय में जब डिजिटल पेमेंट का चलन तेजी से बढ़ रहा है और नकद लेन-देन कम होता जा रहा है, ऐसे में छोटे मूल्य के नोटों का प्रचलन धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। कई देशों ने '1' मूल्य के नोट छापना बंद कर दिया है, जबकि कुछ जगहों पर यह इतनी दुर्लभ हो चुके हैं कि आम लोगों के लिए उन्हें देख पाना भी मुश्किल हो गया है। नेपाल, जापान और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों में ऐसे नोट अब इतिहास का हिस्सा बन चुके हैं। इस बदलते दौर में फैजल का यह संग्रह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यह उन चीजों को सहेज कर रख रहा है, जो धीरे-धीरे दुनिया से गायब हो रही हैं।

उनके संग्रह में कई ऐसे नोट भी शामिल हैं, जो विशेष अवसरों और ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के तौर पर, कतर का फीफा वर्ल्ड कप स्मारक नोट, सऊदी अरब का G20 समिट नोट और फिजी का अनोखा 7 डॉलर का नोट उनके कलेक्शन की शोभा बढ़ाते हैं। ये नोट केवल मुद्रा नहीं, बल्कि उन देशों की उपलब्धियों और वैश्विक आयोजनों की यादगार भी हैं। इस तरह फैजल का संग्रह केवल '1' मूल्य तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें दुनिया की विविधता और घटनाओं का भी समावेश है।

फैजल का मानना है कि हर नोट, चाहे उसकी कीमत कितनी भी छोटी क्यों न हो, अपने देश की कहानी कहता है। उसमें उस देश की संस्कृति, इतिहास, आर्थिक स्थिति और लोगों के जीवन की झलक मिलती है। उनके अनुसार, एक छोटा सा नोट भी यह बताने के लिए काफी होता है कि उस देश में क्या महत्वपूर्ण है और वहां के लोग किस तरह की जीवनशैली जीते हैं।

धरती की कंपकंपी से दहला उत्तर भारत: अफगानिस्तान बॉर्डर से आए झटकों ने मचाई अफरा-तफरी

नई दिल्ली। शुक्रवार का दिन उत्तर भारत के लाखों लोगों के लिए अचानक डर और अनिश्चितता लेकर आया, जब दोपहर के समय धरती ने हलचल शुरू की और कुछ ही सेकंड में यह हलचल तेज झटकों में बदल गई। दिल्ली-एनसीआर से लेकर जम्मू-कश्मीर, पंजाब और चंडीगढ़ तक लोगों ने भूकंप के झटकों को महसूस किया। जैसे ही जमीन हिली, लोगों में घबराहट फैल गई और वे अपने घरों, दफ्तरों और इमारतों से बाहर निकलकर खुले स्थानों की ओर भागते नजर आए। इस अप्रत्याशित घटना ने एक बार फिर यह याद दिला दिया कि प्रकृति के सामने इंसान कितना असहाय है।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, इस भूकंप का केंद्र अफगानिस्तान और ताजिकिस्तान की सीमा के पास स्थित पहाड़ी क्षेत्र में था, जहां रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 5.9 मापी गई। भूकंप का केंद्र भले ही भारत से सैकड़ों किलोमीटर दूर था, लेकिन इसकी तरंगें इतनी शक्तिशाली थीं कि उनका असर उत्तर भारत के बड़े हिस्से में महसूस किया गया। विशेषज्ञों का कहना है कि जब भूकंप का केंद्र गहराई में होता है और उसकी तीव्रता मध्यम से अधिक होती है, तो उसके झटके दूर-दूर तक महसूस किए जा सकते हैं।

दिल्ली-एनसीआर में जैसे ही कंपन महसूस हुआ, नोएडा, गाजियाबाद और गुरुग्राम जैसे क्षेत्रों में लोग तुरंत इमारतों से बाहर निकल आए। कई दफ्तरों में काम कर रहे कर्मचारी एहतियातन बाहर खुले स्थानों में खड़े हो गए। ऊंची इमारतों में रहने वाले लोगों ने खासतौर पर अधिक कंपन महसूस किया, जिससे उनमें डर का माहौल बन गया। कुछ जगहों पर पंखे, लाइट्स और फर्नीचर हिलते हुए देखे गए, जिससे लोगों को स्थिति की गंभीरता का अंदाजा हुआ।

जम्मू-कश्मीर में भूकंप का असर और भी ज्यादा स्पष्ट रूप से देखने को मिला। यहां कई इलाकों में लगातार दो झटके महसूस किए गए, जिससे लोगों में दहशत फैल गई। लोग अपने घरों से बाहर निकलकर सड़कों और खुले मैदानों में जमा हो गए। पहाड़ी इलाकों में भूकंप का खतरा हमेशा अधिक रहता है, क्योंकि वहां जमीन की संरचना अपेक्षाकृत कमजोर होती है और भूस्खलन जैसी घटनाओं का भी खतरा बना रहता है। पंजाब के अमृतसर, लुधियाना और चंडीगढ़ में भी झटके महसूस किए गए। हालांकि यहां झटकों की तीव्रता अपेक्षाकृत कम थी, लेकिन लोगों ने कंपन को स्पष्ट रूप से महसूस किया और एहतियातन बाहर निकल आए। इस दौरान सोशल मीडिया पर भी लोगों ने अपने अनुभव साझा किए, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि भूकंप का असर एक बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैला हुआ था।

इस भूकंप का असर केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान में भी इसके झटके महसूस किए गए। चूंकि भूकंप का केंद्र इन देशों के नजदीक था, इसलिए वहां इसका प्रभाव अधिक होने की संभावना जताई जा रही है। हालांकि, राहत की बात यह है कि अब तक किसी भी क्षेत्र से जान-माल के बड़े नुकसान की कोई खबर सामने नहीं आई है।

प्रशासन ने तुरंत सक्रिय होते हुए लोगों से सतर्क रहने और अफवाहों से बचने की अपील की है। आपदा प्रबंधन टीमों को अलर्ट पर रखा गया है और संवेदनशील इलाकों पर नजर रखी जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि भूकंप के बाद आने वाले आफ्टरशॉक्स (परकंपन) का खतरा बना रहता है, इसलिए लोगों को कुछ समय तक सावधानी बरतनी चाहिए।

भूकंप की वैज्ञानिक व्याख्या करें तो यह पृथ्वी की सतह के नीचे मौजूद टेक्टोनिक प्लेटों की गतिविधियों का परिणाम होता है। पृथ्वी कई बड़ी और छोटी प्लेटों में बंटी हुई है, जो लगातार धीरे-धीरे खिसकती रहती हैं। जब ये प्लेटें आपस में टकराती हैं या एक-दूसरे के नीचे धंसती हैं, तो भारी मात्रा में ऊर्जा उत्पन्न होती है। यही ऊर्जा जब अचानक बाहर निकलती है, तो धरती में कंपन पैदा होता है, जिसे हम भूकंप के रूप में महसूस करते हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार, रिक्टर स्केल पर 5 से 5.9 की तीव्रता वाले भूकंप को मध्यम श्रेणी का माना जाता है। इसमें आमतौर पर पंखे, खिड़कियां और फर्नीचर हिलने लगते हैं, लेकिन बड़े पैमाने पर नुकसान की संभावना कम होती है। हालांकि, अगर यही तीव्रता घनी आबादी वाले क्षेत्रों में सतह के करीब हो, तो नुकसान बढ़ सकता है। 6 या उससे अधिक तीव्रता के भूकंप में इमारतों को नुकसान पहुंच सकता है, जबकि 7 या उससे ऊपर की तीव्रता विनाशकारी साबित हो सकती है। यह घटना एक बार फिर यह याद दिलाती है कि भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं से पूरी तरह बचा नहीं जा सकता, लेकिन सतर्कता और सही तैयारी से इसके प्रभाव को कम जरूर किया जा सकता है। भूकंप के दौरान सबसे जरूरी है कि घबराएं नहीं, सुरक्षित स्थान पर जाएं और इमारतों, बिजली के खंभों और कांच की चीजों से दूर रहें। अगर आप घर के अंदर हैं, तो मजबूत फर्नीचर के नीचे छिपना या दीवार के कोने में खड़ा होना बेहतर होता है। उत्तर भारत में आए इस भूकंप ने भले ही कोई बड़ा नुकसान नहीं पहुंचाया हो, लेकिन इसने लोगों को एक बार फिर सतर्क रहने का संदेश जरूर दिया है।

टिंडर का जाल, भरोसे की कीमत: सूरत में डेटिंग ऐप के जरिए ठगी और साजिश का चौंकाने वाला मामला

सूरत। डिजिटल दौर में रिश्तों की शुरुआत अब मोबाइल स्क्रीन से होने लगी है, लेकिन कभी-कभी यही शुरुआत खतरनाक साजिश का रूप ले लेती है। सूरत से सामने आया एक मामला इस बात की गंभीर चेतावनी देता है कि वर्चुअल दुनिया में बना भरोसा किस तरह असल जिंदगी में भारी पड़ सकता है। यहां एक युवक को डेटिंग ऐप टिंडर पर हुई दोस्ती इतनी महंगी पड़ी कि उसे लाखों रुपये के नुकसान के साथ मानसिक झटका भी सहना पड़ा। एक महिला ने खुद को कारोबारी बताकर नजदीकी बढ़ाई, होटल में बुलाया और फिर नशीला पदार्थ खिलाकर गहने लेकर फरार हो गई। यह पूरी घटना सूरत के पाल थाना क्षेत्र की है, जहां 39 वर्षीय प्रशांतभाई शशिकांतभाई शाह ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। वे शेयर बाजार और प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करते हैं और सामान्य जीवन जी रहे थे, लेकिन कुछ समय पहले टिंडर ऐप पर उनकी मुलाकात सारिका गुप्ता नाम की महिला से हुई। शुरुआत में यह एक सामान्य ऑनलाइन बातचीत थी, जो धीरे-धीरे नियमित संपर्क और विश्वास में बदल गई। महिला ने खुद को सुपारी (बीटल नट) के व्यापार से जुड़ा बताया और कहा कि वह अक्सर व्यापारिक काम के सिलसिले में सूरत आती रहती है। इसी दौरान उसने एक भरोसेमंद और सफल बिजनेसवुमन की छवि बनाई, जिससे युवक पूरी तरह प्रभावित हो गया।

कुछ दिनों की बातचीत के बाद महिला ने

सूरत आने की जानकारी दी और पालनपुर कैनाल रोड स्थित एक होटल में ठहरने की बात कही। उसने युवक को वहां मिलने के लिए आमंत्रित किया। शुरुआत में मुलाकात टलती रही, जिससे युवक को कोई शक नहीं हुआ और वह इसे सामान्य व्यस्तता मानता रहा। आखिरकार मुलाकात का दिन तय हुआ और प्रशांतभाई होटल पहुंचे, जहां दोनों ने साथ समय बिताने की योजना बनाई।

घटना का सबसे खतरनाक पहलू यहीं से शुरू होता है। महिला ने कहा कि कुछ अन्य व्यापारी भी आने वाले हैं, लेकिन उनके आने में देर है, तब तक दोनों साथ खाना खा लेते हैं। युवक अपने साथ खाना लेकर आया था। खाने के दौरान महिला ने एक बहाना बनाया कि उसके परिवार का वीडियो कॉल आ रहा है और उसने युवक को कुछ देर के लिए बाथरूम में जाने को कहा। इसी मौके का फायदा उठाकर उसने खाने में नशीला पदार्थ मिला दिया। जब युवक वापस आया तो महिला ने खुद खाना खाने से इनकार कर दिया और कहा कि उसे भूख नहीं है, लेकिन उसने युवक को खाना खाने के लिए प्रेरित किया। भरोसे में आकर युवक ने खाना खा लिया। इसके कुछ ही समय बाद शाम करीब 6 बजे वह बेहोश हो गया। उसे कुछ भी याद नहीं रहा और वह पूरी तरह अचेत हो गया। करीब 14 घंटे बाद, अगले दिन सुबह करीब 4 बजे जब उसे होश आया, तो हालात पूरी तरह बदल चुके थे। होटल का कमरा खाली था, महिला वहां से जा चुकी थी और उसके शरीर पर पहने सोने के गहने गायब थे। उसकी चेन और दो अंगूठियां, जिनकी कुल कीमत करीब 8.95 लाख रुपये बताई जा रही है, चोरी हो चुकी थीं। इस घटना ने युवक को न सिर्फ आर्थिक नुकसान पहुंचाया, बल्कि मानसिक रूप से भी झकझोर कर रख दिया। घटना के बाद पीड़ित सीधे पाल थाने पहुंचा और पूरी जानकारी पुलिस को दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शुरुआती जांच में होटल के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं, ताकि महिला की पहचान और उसके आने-जाने की गतिविधियों का पता लगाया जा सके। इसके अलावा, पुलिस मोबाइल कॉल डिटेल्स और टिंडर प्रोफाइल की भी जांच कर रही है, जिससे यह समझा जा सके कि महिला असली है या किसी गिरोह का हिस्सा। पुलिस को शक है कि यह कोई अकेली घटना नहीं हो सकती, बल्कि इसके पीछे एक संगठित गिरोह भी हो सकता है, जो डेटिंग ऐप्स के जरिए लोगों को निशाना बनाता है। ऐसे मामलों में अक्सर आरोपी नकली पहचान बनाकर लोगों से दोस्ती करते हैं, उनका विश्वास जीतते हैं और फिर मौका मिलते ही उन्हें लूट लेते हैं। कई बार ये गिरोह अलग-अलग शहरों में सक्रिय रहते हैं और लगातार अपने तरीके बदलते रहते हैं, जिससे उन्हें पकड़ना मुश्किल हो जाता है। यह घटना समाज के लिए एक बड़ा सबक भी है। आज के समय में जब लोग तेजी से डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर जुड़ रहे हैं, वहां सुरक्षा और सतर्कता की जरूरत पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई है। किसी अनजान व्यक्ति पर जल्द भरोसा करना, निजी जानकारी साझा करना या अकेले मिलने जाना जोखिम भरा हो सकता है। खासतौर पर जब सामने वाला व्यक्ति बार-बार मिलने की जगह और परिस्थितियों को नियंत्रित करने की कोशिश करे, तो सावधान हो जाना चाहिए। विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे मामलों से बचने के लिए कुछ बुनियादी सावधानियां अपनानी जरूरी हैं। जैसे कि पहली मुलाकात हमेशा किसी सार्वजनिक स्थान पर होनी चाहिए, जहां अन्य लोग मौजूद हों। इसके अलावा, किसी भी प्रकार का खाना या पेय पदार्थ बिना निगरानी के नहीं लेना चाहिए और अगर सामने वाला व्यक्ति खाने से बच रहा हो, तो सतर्क हो जाना चाहिए। परिवार या दोस्तों को अपनी लोकेशन और मिलने की जानकारी देना भी सुरक्षा के लिहाज से बेहद जरूरी है।

पश्चिम रेलवे - रतलाम मंडल

EL-2025-26-44R, 51, 52 & 53 **ई-टेण्डरिंग नोटिस** **दिनांक: 01.04.2026**

मण्डल रेल प्रबंधक (बिजली / पॉवर) शाखा) पश्चिम रेलवे रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिये "खुली निविदा" ई-निविदा के माध्यम से वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर आमंत्रित करते है। विवरण इस प्रकार है- **क्र.सं.: 1. ई-टेंडरिंग संख्या: EL-2025-26-44R. कार्य का नाम**: Ratlam Division - Electrical Work in connection with (1) Ujjain - provision of Ballast less track on PF no.1 (DN main), PFno.3/4 (loop), PF no.5 (Loop) & PFno.6 (loop) line of Ujjain station. (2) Chittourgarh - provision of Ballast less track at PF Line no. 2 (DN ML), PF line no. 4 (Common Loop line) and PF no. 5 (UP Loop line). (3) Ratlam provision of Ballast less track on PF No.4 (Common Loop line), PF No. 5 (Common Loop line) and PF No. 6 (Common Loop line) at Ratlam. **अनुमानित लागत**: रु. 1,35,72,524.26. **बयाना राशि**: रु. 2,71,500/-. **कार्य समापन अवधि**: 12 माह। **क्र.सं.: 2. ई-टेंडरिंग संख्या: EL-2025-26-51. कार्य का नाम**: Annual Maintenance Contract for RMPUs fitted on AC coaches (Conventional & LHB) of IND & DADN Coaching depot of Ratlam Division for a period of two years. **अनुमानित लागत**: रु. 8,81,81,233.89. **बयाना राशि**: रु. 17,63,600/-. **कार्य समापन अवधि**: 24 माह। **क्र.सं.: 3. ई-टेंडरिंग संख्या: EL-2025-26-52. कार्य का नाम**: Ratlam Division - Chintaman Ganesh Electrical work in connection with Provision of Cover shed on PF 01 and PF 02 at Chintaman Ganesh station (Simhastha 2028). **अनुमानित लागत**: रु. 46,99,334.23. **बयाना राशि**: रु. 94,000/-. **कार्य समापन अवधि**: 12 माह। **क्र.सं.: 4. ई-टेंडरिंग संख्या: EL-2025-26-53. कार्य का नाम**: Ratlam Division - Electrical work in connection with provision of Replacement of Air Conditioners and Water Coolers under passenger amenities at various stations/locations PH-53. **अनुमानित लागत**: रु. 66,91,811.98. **बयाना राशि**: रु. 1,33,800/-. **कार्य समापन अवधि**: 06 माह। **ऊपर दिए गए सभी टेंडर के लिए वेबसाईट पर अपलोड करने की तिथि: 31.03.2026. ऊपर दिए गए सभी टेंडर के लिए निविदा खुलने की तिथि: 28.04.2026.** विस्तृत निविदा सूचना, अहाता शर्ते एवं अन्य शर्ते वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। निविदा फार्म की लागत शून्य है।

SPAN/7/1/529

हमें लाइक करें : facebook.com/WesternRly | हमें फॉलो करें : X.com/WesternRly

NHSRCL परियोजना के सबंध में कार्य के कारण दो ट्रेने प्रभावित रहेगी

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत कांकरिया–वटवा रेलखंड पर NHSRCL परियोजना के तहत प्रीकास्ट पोर्टल बीम स्थापित करने हेतु आवश्यक कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इस कार्य के लिए ब्लॉक लिया जाएगा, जिसके कारण निम्नलिखित ट्रेनें दिनांक 04 अप्रैल, 2026 से 08 मई, 2026 तक प्रभावित रहेंगी। जिसका विवरण निम्नानुसार है :

ट्रेन निरस्त

ट्रेन संख्या 19036 माणिनगर – वडोदरा इंटरसिटी एक्सप्रेस पूर्णतः निरस्त रहेगी।

ट्रेन संख्या 19035 वडोदरा – वटवा इंटरसिटी एक्सप्रेस पूर्णतः निरस्त रहेगी।

ठहराव निरस्त

ट्रेन संख्या 12902, अहमदाबाद–दादर गुजरात मेल का दिनांक 04 अप्रैल, 2026 से 08 मई, 2026 तक माणिनगर स्टेशन पर ठहराव अस्थायी रूप से निरस्त रहेगा।

यात्रियों से अनुरोध है कि वे अपनी यात्रा से पूर्व ट्रेनों की अद्यतन स्थिति की जानकारी हेतु एनटीईएस (NTES) ऐप अथवा www.enquiry.indianrail.gov.in का उपयोग करें।

ऊर्जा आपूर्ति पर भू-राजनीतिक असर: एलपीजी आयात में गिरावट ने बढ़ाई चिंता, अमेरिका बना नया सहारा

नई दिल्ली। वैश्विक स्तर पर बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों का असर अब सीधे भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर दिखाई देने लगा है। मार्च 2026 के ताजा आंकड़ों ने यह संकेत दिया है कि देश की एलपीजी आपूर्ति एक संवेदनशील मोड़ पर खड़ी है, जहां पारंपरिक आपूर्तिकर्ताओं से घटती सप्लाई और बढ़ती घरेलू मांग के बीच संतुलन बनाना एक बड़ी चुनौती बन गया है। हालात ऐसे हैं कि भारत को न केवल अपने आयात स्रोतों पर पुनर्विचार करना पड़ रहा है, बल्कि दीर्घकालिक ऊर्जा रणनीति को भी नए सिरे से परिभाषित करना आवश्यक हो गया है।

शिप ट्रैकिंग एजेंसी केप्लर के अनुसार, मार्च में भारत का कुल एलपीजी आयात घटकर 1.22 मिलियन टन रह गया, जो हाल के महीनों की तुलना में एक बड़ी गिरावट है। जनवरी के मुकाबले इसमें लगभग 46 प्रतिशत और फरवरी की तुलना में करीब 40 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। यह गिरावट केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि उस दबाव का संकेत है जो अंतरराष्ट्रीय बाजार में अस्थिरता के कारण भारत की ऊर्जा आपूर्ति प्रणाली पर पड़ रहा है।

इस कमी के पीछे सबसे बड़ा कारण पश्चिम एशिया में जारी तनाव को माना जा रहा है। यह क्षेत्र लंबे समय से भारत के लिए तेल और गैस का प्रमुख स्रोत रहा है, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में वहां से आपूर्ति बाधित हो रही है। संयुक्त अरब अमीरात, कतर, कुवैत और सऊदी अरब जैसे पारंपरिक साझेदारों से एलपीजी आयात में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है। खासतौर पर यूएई से आने वाली आपूर्ति जनवरी के स्तर के मुकाबले घटकर करीब 28 प्रतिशत रह जाना इस बदलाव की गंभीरता को दर्शाता है।

हालांकि, इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में एक नया रुझान भी सामने आया है, जहां संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के लिए सबसे बड़ा एलपीजी आपूर्तिकर्ता बनकर उभरा है। मार्च में अमेरिका से 4.20 लाख टन गैस आयात की गई, जो जनवरी के मुकाबले 56 प्रतिशत अधिक है। यह बदलाव न केवल तत्काल राहत प्रदान करता है, बल्कि यह भी संकेत देता है कि भारत अब अपने ऊर्जा स्रोतों को विविध बनाने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। अमेरिका के साथ बढ़ता ऊर्जा सहयोग भविष्य में भारत की ऊर्जा सुरक्षा को स्थिरता प्रदान कर सकता है।

इस बीच, एक और दिलचस्प और महत्वपूर्ण विकास यह रहा कि करीब सात वर्षों के अंतराल के बाद ईरान से 43,000 टन एलपीजी की खेप भारत पहुंची। यह केवल एक आपूर्ति नहीं, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीतिक समीकरणों में बदलाव का संकेत भी माना जा रहा है। हालांकि यह मात्रा कुल आयात के मुकाबले कम है, लेकिन इसका रणनीतिक महत्व काफी अधिक है।

भारत की स्थिति को और जटिल बनाता है उसका आयात पर उच्च निर्भरता। देश अपनी कुल एलपीजी खपत का लगभग 60 प्रतिशत आयात करता है, जिससे किसी भी वैश्विक व्यवधान का सीधा असर घरेलू बाजार पर पड़ता है। ऐसे में सरकार ने स्थिति को संभालने के लिए कई तात्कालिक कदम उठाए हैं। मार्च के मध्य तक घरेलू एलपीजी उत्पादन में करीब 40 प्रतिशत की वृद्धि की गई है, जो यह दर्शाता है कि सरकार आंतरिक संसाधनों को अधिकतम उपयोग में लाने की दिशा में सक्रिय है।

इसके अलावा, रिफाइनरियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे पेट्रोकेमिकल उत्पादन के बजाय हाइड्रोकार्बन प्रवाह को एलपीजी उत्पादन की ओर मोड़ें। यह कदम अस्थायी रूप से आपूर्ति बढ़ाने में मदद कर सकता है, लेकिन इसके दीर्घकालिक प्रभावों पर भी विचार करना आवश्यक है, क्योंकि इससे अन्य औद्योगिक क्षेत्रों पर असर पड़ सकता है।

औद्योगिक मांग भी इस पूरे समीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। फार्मास्यूटिकल, खाद्य प्रसंस्करण और रसायन उद्योगों में एलपीजी की मांग लगातार बढ़ रही है। यह मांग न केवल आर्थिक गतिविधियों का संकेत है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि ऊर्जा आपूर्ति में किसी भी प्रकार की बाधा का असर सीधे औद्योगिक उत्पादन और आर्थिक विकास पर पड़ सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि वर्तमान स्थिति भारत के लिए एक चेतावनी है कि उसे अपनी ऊर्जा नीति को और अधिक मजबूत और लचीला बनाना होगा। केवल पारंपरिक आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भर रहना अब पर्याप्त नहीं है। इसके बजाय, विभिन्न देशों के साथ ऊर्जा साझेदारी को बढ़ाना, रणनीतिक भंडारण क्षमता को मजबूत करना और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर निवेश करना समय की मांग है।

ईरान संघर्ष का वैश्विक असर: महंगाई की आंच में सुलगता खाद्य संकट

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष अब केवल सैन्य या कूटनीतिक दायरे तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसका असर धीरे-धीरे वैश्विक अर्थव्यवस्था के सबसे संवेदनशील क्षेत्र—खाद्य सुरक्षा—पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। एक महीने से अधिक समय से जारी इस तनाव ने अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अस्थिरता बढ़ा दी है, जिसका सीधा प्रभाव खाद्य वस्तुओं की कीमतों पर पड़ रहा है। हालात ऐसे बनते जा रहे हैं कि आने वाले समय में यह संकट और गहराने की आशंका जताई जा रही है।

संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन के ताजा आंकड़ों के अनुसार मार्च 2026 में खाद्य वस्तुओं की वैश्विक कीमतें बढ़कर पिछले वर्ष सितंबर के बाद के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई हैं। यह वृद्धि केवल मांग और आपूर्ति के सामान्य उतार-चढ़ाव का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे ऊर्जा क्षेत्र में आई तेज़ी एक प्रमुख कारण बनकर उभरी है। कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस की कीमतों में उछाल ने खाद्य उत्पादन की पूरी श्रृंखला को प्रभावित किया है, जिससे लागत का दबाव हर स्तर पर महसूस किया जा रहा है। दरअसल, आधुनिक कृषि पूरी तरह ऊर्जा पर निर्भर हो चुकी है। खेतों की जुताई से लेकर सिंचाई, उर्वरक निर्माण, फसल कटाई, भंडारण और परिवहन तक हर चरण में तेल और गैस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसे ही इनकी कीमतें बढ़ती हैं, उत्पादन लागत अपने आप बढ़ जाती है और इसका असर अंततः उपभोक्ताओं तक पहुंचता है। यही कारण है कि वर्तमान भू-राजनीतिक संकट का असर सीधे आम लोगों की रसोई तक पहुंचने लगा है।

एफएओ के मुख्य अर्थशास्त्री मेक्सिमो तोरेरो ने इस स्थिति पर चिंता जताते हुए कहा है कि तेल की कीमतों में तेजी का खाद्य बाजार पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। हालांकि फिलहाल वैश्विक स्तर पर अनाज की पर्याप्त उपलब्धता के कारण कीमतों में अत्यधिक उछाल नहीं आया है, लेकिन यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है, तो इसके गंभीर परिणाम सामने आ सकते हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि कच्चे माल की लागत ऊंची बनी रहती है, तो किसान लागत कम करने के लिए कम उर्वरक वाली फसलों की ओर रुख कर सकते हैं, जिससे भविष्य में कृषि उत्पादन प्रभावित हो सकता है।

मार्च में एफएओ का फूड प्राइस इंडेक्स फरवरी की तुलना में 2.4 प्रतिशत बढ़ा है, जबकि सालाना आधार पर इसमें लगभग 1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। यह आंकड़े भले ही बहुत बड़े न लगें, लेकिन यह उस शुरुआती दबाव का संकेत हैं जो आगे चलकर बड़े संकट का रूप ले सकता है। खासतौर पर गेहूं की कीमतों में 4.3 प्रतिशत की वृद्धि चिंता का विषय है, क्योंकि यह दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसलों में से एक है।

नासिक के फर्जी बाबा अशोक खेरात कांड: महिलाओं का शोषण, राजनीतिक संबंध और अंधविश्वास का पर्दाफाश

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। महाराष्ट्र के नासिक निवासी भोंडुबाबा उर्फ अशोक खेरत को आजकल राक्षस, अघोरी, व्यभिचारी, बलात्कारी, दलाल जैसे नामों से पुकारा जा रहा है। लेकिन इन सबसे बढ़कर, उन्हें भोंडु के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है ढोंगी, धोखेबाज।

इस पाखंडी बाबा के खुलासे होते ही महाराष्ट्र की राजनीति और समाज में भूकंप जैसे झटके लग रहे हैं। यह पाखंडी बाबा ज्योतिष, पूजा-पाठ और समस्याओं के समाधान का काम करता था और धागे की आड़ में तथा तथाकथित निजी पूजा के नाम पर महिलाओं के कपड़े उतारता था। उसने उनमें से कुछ के साथ शारीरिक संबंध भी बनाए थे।

सीसीटीवी में कैद उन घंटों के वीडियो से पता चलता है कि गुरुघंटाल धोंगीबाबा उर्फ अशोक खेरात महिलाओं को कुछ गतिविधियों में शामिल होने या उनके साथ सोने के लिए मजबूर करता था। वह पैसे लेकर कई लोगों के लिए कई काम करवाता था। अशोक खेरात ने ऐसा जाल बिछा रखा था कि राजनेताओं के परिवार, उच्च अधिकारियों के परिवार और उद्योगपतियों के परिवार उसके आश्रम में आते थे, जिससे समाज में यह चर्चा और फैल जाती थी कि बाबा बहुत प्रभावशाली हैं।

यह याद रखना चाहिए कि मौजूदा उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, मुख्यमंत्री बनने के कुछ ही दिनों बाद, अपने परिवार के साथ हेलीकॉप्टर से नासिक के पास स्थित इस भोंदू उर्फ ढोंगी के आश्रम पहुंचे थे। वहां परिवार ने बाबा के सामने बैठकर प्रार्थना की थी। उस समय की उनकी तस्वीर वायरल हुई थी, लेकिन अब सोशल मीडिया से गायब हो चुकी है। तो क्या मुख्यमंत्री के इशारों पर चलने वाले एक व्यक्ति के प्रभाव में आकर पूरा प्रशासनिक तंत्र और पुलिस व्यवस्था, साथ ही अधिकारी और कर्मचारी, आम जनता और भोली-भाली महिलाएं भी दब गईं? और इसी वजह से कहा जाता है कि इस बाबा ने सौ से अधिक महिलाओं का शारीरिक और आर्थिक शोषण किया है।

इस प्रकार, अशोक खेरत जैसे पाखंडी बाबाओं ने धन और दौलत कमाने के लिए यौन संबंध, शक्ति, प्रभाव, जादू आदि का इस्तेमाल किया। धन और दौलत के लालच में बाबाओं ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। बाबा के होने से कोई समस्या असंभव नहीं थी। महिलाएं अक्सर शादी, वैवाहिक समस्याओं, संतानोत्पत्ति, संपत्ति विवाद, स्वास्थ्य, नौकरी-व्यापार आदि जैसी समस्याओं के साथ आती थीं। कई बार वे अपने भाई, पति, बहन या माता-पिता के साथ आती थीं। वे पीड़ित महिला को बाहर एक कमरे में बिठा देते थे और यह पाखंडी, जिसे कैप्टन बाबा भी कहा जाता था, उसे उस कमरे से जुड़े दूसरे कमरे में ले जाता था और अनुष्ठानों के नाम पर उसके साथ यौन संबंध बनाते हुए वीडियो रिकॉर्ड करता था। इतना ही नहीं, उसका दावा था कि यौन संबंध बनाने पर ही उसकी समस्या का समाधान होगा। ये सभी यौन क्रियाएं सीसीटीवी कैमरों में कैद हो जाती थीं। फिर, डर के मारे महिला को चुप रहने के लिए कहा जाता था। और इस तरह उन्होंने राजनेताओं, उच्च अधिकारियों और उद्योगपतियों की पत्नियों, बहनों और बेटियों से लाखों रुपये लूटे महाराष्ट्र और नासिक जिले में ऐसे कामी बाबा के तीन सौ से अधिक वीडियो वायरल हो रहे हैं। इसके बाद महाराष्ट्र सरकार ने व्हाट्सएप या अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर इन्हें साझा करने पर प्रतिबंध लगा दिया है। इन वीडियो में कैद महिलाओं की निजता, गरिमा और सम्मान को बनाए रखना जरूरी है। सरकार ने यह कदम उन्हें समाज में तिरस्कृत होने से बचाने के उद्देश्य से उठाया है। साथ ही, यह नेताओं के लिए भी फायदेमंद है। अगर कोई नेता इसमें फंस जाता है, तो उसे बचाया जा सकेगा। इसी वजह से महाराष्ट्र पुलिस ने वीडियो साझा करने के आरोप में लगभग डेढ़ से दो सौ लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। अगर हम इस नजरिए से देखें तो बाबा के अपराध बेहद गंभीर हैं। और अगर पुलिस और एसआईटी की जांच में ये बात सामने आती है तो उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जा सकती है। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, इस बाबा के पास करोड़ों रुपये की संपत्ति है।

ये पाखंडी दिन में संतों के वस्त्र पहनते हैं, गले में तिलक, तपक और माला पहनते हैं, और रात में शराबखानों, शराब की पार्टियों, चिकन पार्टियों जैसी शैतानी हरकतें करते हैं और लोगों की आंखों में धूल झोंकते हैं। लोग ऐसे पाखंडियों से ताबीज, नींबू, मिर्च, मंत्र, तंत्र, अनुष्ठान आदि प्राप्त करके खुद को भाग्यशाली समझते हैं। इसलिए, जनहित में कार्यरत सामाजिक सेवा संगठन विकास ग्राहक सुरक्षा एवं अनुसंधान केंद्र महाराष्ट्र सरकार और केंद्र सरकार से सार्वजनिक रूप से निवेदन करता है कि वे ऐसे पाखंडियों को, चाहे वे किसी भी राज्य में हों, बेनकाब करें और विदेशों की तरह उन्हें कड़ी सजा दें, उनके खिलाफ मजबूत एफआईआर दर्ज करें और उन्हें फांसी पर चढ़ाएं। यदि सरकार इससे बचकर भागती है, तो सरकार को इनका सामना करने में संकोच नहीं करना चाहिए। यदि सरकार सोशल मीडिया पर महिलाओं के अश्लील वीडियो नहीं हटाती है, तो उनके परिवार और समाज उन्हें तिरस्कार की नजर से देखेंगे। यदि सरकार द्वारा ऐसे अश्लील वीडियो नहीं हटाए जाते हैं, तो जनहित में कार्यरत सामाजिक सेवा संगठन विकास ग्राहक सुरक्षा एवं अनुसंधान केंद्र के दक्षिण गुजरात अध्यक्ष छगनलाल डी. मेवाड़ा द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका (PIL) भी दायर की जाएगी। अंततः, समाचार पत्रों और टीवी में मंत्रों, तंत्र और दोरा धागे के विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगाना और लोगों को अंधविश्वास के चंगुल में फंसने से बचाना सरकार का दायित्व है।

सूरत की सियासत में थमा पारिवारिक टकराव का तूफान, चुनावी माहौल में बदले समीकरणों के संकेत

सूरत। गुजरात के सूरत शहर में नगर निगम चुनाव से पहले जिस तरह राजनीतिक हलचल तेज होती जा रही है, उसी के बीच एक ऐसा घटनाक्रम सामने आया जिसने न केवल स्थानीय राजनीति को चर्चा का केंद्र बना दिया, बल्कि यह भी दिखा दिया कि राजनीति और परिवार के बीच संतुलन कैसे साधा जाता है। एक ही परिवार के दो सदस्यों के अलग-अलग राजनीतिक दलों से चुनाव लड़ने की अटकलों ने पिछले कुछ दिनों से माहौल को गरमा दिया था, लेकिन अब इन तमाम कयासों पर विराम लग गया है और संभावित 'पॉलिटिकल वॉर' टल गया है।

दरअसल, पाटीदार आरक्षण आंदोलन से जुड़े चर्चित नेता अल्पेश कथीरिया के भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने और पार्षद पद के लिए टिकट मांगने के बाद सूरत की राजनीति में नई हलचल शुरू हो गई थी। अल्पेश कथीरिया लंबे समय से सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं और उनके बीजेपी में शामिल होने को पार्टी के लिए एक रणनीतिक कदम माना जा रहा था। जैसे ही उनके चुनाव लड़ने की चर्चा सामने आई, वैसे ही उनके परिवार के अन्य सदस्यों को लेकर भी अटकलों का दौर शुरू हो गया।

इन अटकलों को और हवा तब मिली जब यह खबर सामने आई कि उनकी पत्नी काव्या कथीरिया, जिन्हें मोनाली हिरपारा के नाम से भी जाना जाता है, वार्ड नंबर 3 से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही हैं। यह चर्चा इसलिए भी खास बन गई क्योंकि दूसरी ओर धर्मिका मालवीय, जो पहले आम आदमी पार्टी से जुड़ी रही हैं, ने बीजेपी से वार्ड नंबर 2 के लिए टिकट की मांग की थी। इस पूरे घटनाक्रम ने यह संकेत देना शुरू कर दिया था कि यदि मोनाली हिरपारा आम आदमी पार्टी के टिकट पर चुनाव मैदान में उतरती हैं, तो एक ही परिवार के सदस्य अलग-अलग पार्टियों से आमने-सामने हो सकते हैं।

ऐसी स्थिति सूरत की राजनीति में एक असामान्य और दिलचस्प परिदृश्य पैदा करती, जहां पारिवारिक रिश्तों से ऊपर राजनीतिक विचारधाराएं दिखाई देतीं। यही कारण था कि यह मुद्दा केवल राजनीतिक गलियारों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आम जनता और सोशल मीडिया पर भी चर्चा का विषय बन गया। लोग यह जानने के लिए उत्सुक थे कि क्या वास्तव में एक ही घर के भीतर राजनीतिक प्रतिस्पर्धा देखने को मिलेगी।

हालांकि, इन तमाम अटकलों को मोनाली हिरपारा के एक स्पष्ट बयान ने पूरी तरह से खत्म कर दिया। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि उन्होंने न तो किसी पार्टी से टिकट मांगा है और न ही किसी प्रकार का नामांकन फॉर्म भरा है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि फिलहाल उनका पूरा ध्यान अपने परिवार और छोटे बच्चे की देखभाल पर केंद्रित है, जिसके चलते वह सक्रिय राजनीति में हिस्सा नहीं ले पा रही हैं। उनके इस बयान के बाद यह स्पष्ट हो गया कि परिवार के भीतर किसी तरह का राजनीतिक टकराव नहीं होने जा रहा है।

मोनाली हिरपारा ने यह भी कहा कि वह पार्टी से जुड़ी हुई जरूर हैं, लेकिन चुनाव लड़ने की उनकी कोई योजना नहीं है। यह बयान न केवल राजनीतिक अटकलों पर विराम लगाने वाला था, बल्कि इसने यह भी दिखाया कि निजी जीवन और पारिवारिक जिम्मेदारियां कई बार राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं पर प्राथमिकता पा जाती हैं। उनके इस फैसले को कई लोगों ने परिपक्वता और संतुलन का उदाहरण भी बताया।

इस पूरे घटनाक्रम ने सूरत की राजनीति में एक महत्वपूर्ण संदेश दिया है कि चुनावी रणनीतियां केवल राजनीतिक समीकरणों पर ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत परिस्थितियों और पारिवारिक प्राथमिकताओं पर भी निर्भर करती हैं। अल्पेश कथीरिया का बीजेपी में शामिल होना और टिकट की मांग करना अपने आप में एक बड़ा राजनीतिक कदम है, लेकिन उनके परिवार के अन्य सदस्य का चुनावी मैदान से दूर रहना यह दर्शाता है कि हर राजनीतिक कहानी के पीछे एक मानवीय पक्ष भी होता है।

साथ ही, यह घटनाक्रम यह भी संकेत देता है कि चुनाव से पहले राजनीतिक दलों के भीतर और बाहर समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। अलग-अलग दलों से जुड़े नेताओं के बीच संभावित गठजोड़, दल-बदल और टिकट की मांग जैसी गतिविधियां यह दिखाती हैं कि सूरत नगर निगम चुनाव इस बार काफी दिलचस्प और प्रतिस्पर्धात्मक होने वाले हैं।

हालांकि पारिवारिक 'पॉलिटिकल वॉर' की संभावना अब समाप्त हो गई है, लेकिन इसने जो चर्चा और हलचल पैदा की, उसने यह जरूर साबित कर दिया कि स्थानीय स्तर की राजनीति भी किसी बड़े राजनीतिक ड्रामे से कम नहीं होती। आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि अल्पेश कथीरिया को बीजेपी से टिकट मिलता है या नहीं और सूरत की राजनीति किस दिशा में आगे बढ़ती है।

कुल मिलाकर, इस पूरे प्रकरण ने यह स्पष्ट कर दिया है कि राजनीति में संभावनाएं जितनी तेजी से बनती हैं, उतनी ही तेजी से खत्म भी हो जाती हैं। सूरत में टला यह 'पॉलिटिकल वॉर' भले ही अब अतीत की बात बन गया हो, लेकिन इसने चुनावी माहौल को और अधिक रोमांचक जरूर बना दिया है और यह संकेत दे दिया है कि आने वाले समय में यहां राजनीतिक गतिविधियां और भी तेज होने वाली हैं।

अंधविश्वास, पाखंडी पुजारियों और धर्म के नाम पर महिलाओं के शोषण से जुड़े कठिन प्रश्न और वास्तविकता पर चिंतन

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। भारत में, धर्म के नाम पर अधर्म फैलाने वाले अंधविश्वासों का शिकार अक्सर महिलाएं ही होती हैं। एक तरफ हम सनातन धर्म की बात करते हैं, तो दूसरी तरफ बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र शास्त्री के गुरु रामभद्राचार्य महाराज जैसे बाबाओं ने महिलाओं के बारे में अभद्र टिप्पणियां करके उसी धर्म को बदनाम किया है। मदर राम रहीम जैसे लोगों ने महिलाओं के साथ व्यभिचार करके कई महिलाओं का जीवन बर्बाद कर दिया है। यहां तक कि एक पत्रकार की हत्या के जुर्म में जेल की सलाखों को गिनना भी शुरू कर दिया है।

हमारे देश में ऐसे बाबा और बापू की दुकानें इतनी लोकप्रिय क्यों हैं? इसका कारण हमारे उन नेताओं और राजनीतिज्ञों का संरक्षण है जो गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं। इन राजनीतिज्ञों के समर्थन से, जैसे ही सरकारी चरागाह बाबाओं और बापूओं को मुफ्त में दिए जाते हैं, उनके अनुयायियों द्वारा आलीशान एसी आश्रम स्थापित कर दिए जाते हैं। और फिर वे उनमें महिलाओं के साथ विलासितापूर्ण जीवन जीते हैं।

ऐसे बाबा फिर

आलीशान कारों, चार्टर्ड विमानों, ब्रांडेड टीवी, ब्रांडेड मोबाइल जैसी सभी सांसारिक सुविधाओं में लिप्त हो जाते हैं और सनातन धर्म के नाम पर अंधविश्वास फैलाते हैं तथा समाज का आर्थिक और शारीरिक शोषण करते हैं। धर्म में उच्च पद पर आसीन रामभद्राचार्य जी ने महिलाओं के बारे में कहा कि महिलाएं मनोरंजन का साधन हैं। सनातन धर्म के लिए यह कितना शर्मनाक है कि एक तथाकथित गुरु के मुख से ऐसी अभद्र टिप्पणी निकले? शंकराचार्य जी के ऐसे कथन महिलाओं के मान-सम्मान को कितनी गहराई से आहत करते हैं? ऐसे निम्न स्तर की और भद्दी टिप्पणियां करने वाले लोग इसे कब समझेंगे?

यह लेखक बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र शास्त्री को खुली चुनौती देता है कि यदि आप भूत, भविष्य और वर्तमान देख सकते हैं, तो भविष्य देखने वालों के लिए सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि जब उनके शिष्यों द्वारा निर्मित विशाल गुंबदों में लाखों की भीड़ जमा हुई और उनमें कथा प्रवचन दिए गए, यदि आप उनका भविष्य जान लेते, तो भगदड़ में इतने निर्दोष लोग नहीं मरते। मेरे प्रश्नों के केवल तीन सही उत्तर दीजिए। इसके साथ ही, धीरेन्द्र शास्त्री जैसे कई भविष्य के द्रष्टाओं को भी चुनौती है कि मैं अपने माध्यम से तीन प्रश्न पूछना चाहता हूँ और यदि आप उनका सही उत्तर देते हैं, तो मैं अपना घर, परिवार और संसार छोड़कर जीवन भर आपके आश्रम की सेवा करूँगा। यह मेरा वादा है। और यह मेरा खुला निमंत्रण है। यह मेरा मोबाइल नंबर 9925041145 है। यदि आप

मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते हैं, तो आपको अपना आडंबर त्यागना होगा, अपने एसी आश्रम बंद करने होंगे, बड़ी विलासितापूर्ण कारों, हेलीकॉप्टरों और चार्टर्ड विमानों का त्याग करना होगा, और यहाँ तक कि भौतिक सुख और धन का भी त्याग करके एक आम इंसान बनना होगा।

एक तरफ, जब आप अतीत, भविष्य और वर्तमान को देखने की बात करते हैं, तो आप यह क्यों नहीं देख सकते कि आप पर कौन और कब हमला करेगा? आपकी मृत्यु कब होगी? यदि आप जानते हैं, तो सरकारी या निजी खर्च पर सुरक्षा गार्ड और सुरक्षाकर्मियों को रखने की क्या आवश्यकता है? यदि आप अपना भविष्य नहीं देख सकते, तो आप आम आदमी का भविष्य कैसे देख सकते हैं?

ऐसे बाबा चांदी की कुर्सियों और सिंहासनों पर बैठकर भौतिक सुखों का आनंद लेते हैं। तब बाबा राम-रहीम, आश्रम और नारायण साईं की याद आती है, जिन्होंने स्त्रियों के साथ व्यभिचार किया और जेल की सजा पाई। और यह स्वाभाविक है कि जब ऐसे व्यभिचारी बाबाओं को बार-बार पैरोल मिलती है, तो सरकार पर भी सवाल उठते हैं। सरकार बार-बार ऐसे व्यभिचारी बाबाओं पर कड़ी नजर क्यों रखती है, जो अपराधी हैं? यह भी एक विचारणीय प्रश्न है। अतीत में स्वामीनारायण के साधुओं पर भी ऐसे ही आरोप लगे हैं। तब राम रहीम, धीरेन्द्र शास्त्री और भविष्य देखने का दिखावा करने वाले अन्य साधुओं ने एक पैसा भी निवेश नहीं किया है या करने वाले नहीं हैं।

जिस प्रकार राजनेताओं को व्यापार करने के लिए धन जुटाने का कोई न कोई तरीका ढूंढना पड़ता है, उसी प्रकार ये पाखंडी सनातन बाबा भी अनेक अनुयायी जुटा लेते हैं। इसलिए लोगों को ऐसे पाखंडियों से दूर रहना चाहिए, और विशेषकर महिलाओं को स्वयं और अपने परिवार के सदस्यों, माताओं, बहनों और बेटियों को इनसे दूर रखना चाहिए और सनातन धर्म के नाम पर पाखंड फैलाने वालों के जाल में नहीं फंसना चाहिए।

ऐसे नकली बाबाओं के कारण सनातन हिंदू धर्म दिन-प्रतिदिन कलंकित होता जा रहा है। यदि हम भी सच्चे सनातन बन जाएं और ऐसे नकली बाबाओं और उन्हें सुख-सुविधाएं प्रदान करने वाले राजनेताओं का पर्दाफाश करें, तो यही सच्चे सनातनवाद का रहस्य होगा। अंत में, आइए गुरु पूर्णिमा और जन्मदिनों के बारे में बात करें। गुरु पूर्णिमा पर, सफेद बगुले के पंख धारण करके संतों के दर्शन करने आने वाले बड़े-बड़े राजनेता, शिष्य आदि महंगे उपहारों, भेंटों और नकद एवं वस्त्रों जैसे दान से नकली गुरुओं और बाबाओं की पूजा करते हैं।

इसी तरह, नेताओं के जन्मदिन पर उनके तथाकथित समर्थक उन्हें बड़े-बड़े और महंगे उपहार देते हैं और नेताओं की नज़रों में सबसे ऊपर आने की होड़ में लग जाते हैं। इस तरह भगवा और सफेद कपड़े पहनने वाले लोग बिना किसी निवेश के नकद और उपहार पा लेते हैं। वहीं, आम व्यापारी, चाहे छोटा हो या बड़ा, को अपना घर या बैंक से ऋण लेकर ही व्यापार करना पड़ता है। यह एक कड़वी सच्चाई है जहाँ एक वर्ग के पास कोई पूंजी नहीं है और दूसरा वर्ग कड़ी मेहनत करता है, फिर भी असफल हो जाता है।

सप्ताह के दौरान सोना वायदा में 7166 रुपये, चांदी वायदा में 12621 रुपये और क्रूड ऑयल वायदा में 1409 रुपये का ऊछाल

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 303015.49 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 1052462.22 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 197401.82 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 35825 पॉइंट के स्तर पर

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 27 मार्च से 2 अप्रैल के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 1355485.90 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 303015.49 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 1052462.22 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का अप्रैल वायदा 35825 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल साप्ताहिक प्रीमियम टर्नओवर 40114.44 करोड़ रुपये का हुआ।

आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 197401.82 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा सप्ताह के आरंभ में 144000 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 154500 रुपये और नीचे में 143652 रुपये पर पहुंचकर, 142514 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 7166 रुपये या 5.03 फीसदी बढ़कर 149680 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी अप्रैल वायदा 5094 रुपये या 4.46 फीसदी की तेजी के संग 119312 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल अप्रैल वायदा 642 रुपये या 4.49 फीसदी की मजबूती के साथ 14935 रुपये प्रति 1 ग्राम बोला गया। सोना-मिनी मई वायदा 142190 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 152680 रुपये और नीचे में 142158 रुपये पर पहुंचकर, 6900 रुपये या 4.89 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 148140 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन अप्रैल वायदा प्रति 10 ग्राम 143000 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 153100 रुपये और नीचे में 142239 रुपये पर पहुंचकर, 141547 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 6992 रुपये या 4.94 फीसदी की तेजी के संग 148539 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा सप्ताह के आरंभ में 224247 रुपये के भाव पर खूलकर, 243981 रुपये के उच्च और 221209 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 219874 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 12621 रुपये या 5.74 फीसदी के ऊछाल के साथ 232495 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 11279 रुपये या 5.03 फीसदी बढ़कर 235645 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 11360 रुपये या 5.06 फीसदी की तेजी के संग 235759 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 17901.28 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा अप्रैल वायदा 16.2 रुपये या 1.42 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 1155.1 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि जस्ता अप्रैल वायदा 13.35 रुपये या 4.31 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 323.2 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम अप्रैल वायदा 18.2 रुपये या 5.41 फीसदी बढ़कर 354.35 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि सीसा अप्रैल वायदा 2.8 रुपये या 1.45 फीसदी की बढ़त के साथ 195.25 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 87626.79 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल अप्रैल वायदा सप्ताह के आरंभ में 8867 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 10640 रुपये के उच्च और 8820 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 1409 रुपये या 15.66 फीसदी की मजबूती के साथ 10408 रुपये प्रति बैरल बोला गया। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी अप्रैल वायदा 1404 रुपये या 15.6 फीसदी की तेजी के संग 10403 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस अप्रैल वायदा सप्ताह के आरंभ में 278.8 रुपये के भाव पर खूलकर, 291.9 रुपये के उच्च और 262.4 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 281.1 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 17.1 रुपये या 6.08 फीसदी लुढ़ककर 264 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी अप्रैल वायदा 17.2 रुपये या 6.12 फीसदी औंधकर 264 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल अप्रैल वायदा सप्ताह के आरंभ में 1018.5 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 22.4 रुपये या 2.22 फीसदी की तेजी के संग 1029.4 रुपये प्रति किलो हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 136275.43 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 61126.39 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 11803.08 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 3925.80 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 135.11 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 2037.30 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 68566.23 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 18801.70 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

सप्ताह के अंत में ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 6648 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 30171 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 15567 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 192646 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 30575 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 5778 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 13696 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 49856 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 15669 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 36613 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स अप्रैल वायदा 34417 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 36965 के उच्च और 34395 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 1536 पॉइंट बढ़कर 35825 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।